ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २५२ म अंक १५ जून २०१८ (वर्ष ११ मास १२६ अंक २५२)

ऐ अंकमे अछि:-

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

२. गद्य

Magazine विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।

२. गद्य

२.१.१.आशीष अनचिन्हार- नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिंदी गजलक तुलनात्मक विवेचना २.प्रणव कुमार- मैथिली कथामे स्त्री

२.२.दुर्गानन्द मण्डल- लघुकथा- सीख

२.३.१.१.जगदीश प्रसाद मण्डल- लघुकथा- संकट १.२. जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु - उपन्यासक आरम्भ (आगाँ)

२.४.रबीन्द्र नारायण मिश्र- १.नमस्तस्यै- उपन्यासक आरम्भ (आगाँ) २.लघुकथा- सनकल

१.आशीष अनचिन्हार- नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिंदी गजलक तुलनात्मक विवेचना २.प्रणव कुमार- मैथिली कथामे स्त्री

१

आशीष अनचिन्हार

नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिंदी गजलक तुलनात्मक विवेचना

एहिठाम समीक्षा लेल हम नरेन्द्रजीक मैथिली आ हिंदी गजलकेँ चुनलहुँ अछि। ई समीक्षा एकै गजलकारक दू भाषामे लिखल गजलक तुलना अछि। पहिने हम दूनू भाषाक गजल आ ओकर बहरक तक्ती ओ रदीफ-काफियाक समीक्षा करब तकर बाद भाव, कथ्य ओ भाषाक हिसाबसँ।

नरेन्द्रजीक चारि टा मैथिली गजल जे कि मिथिला दर्शनक Nov-Dec-16 अंकमे प्रकाशित अछि---

1
राज काज भगवान भरोसे
अछि सुराज भगवान भरोसे

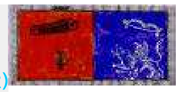
मूलधनक तँ बाते छोड़ू
सूदि ब्याज भगवान भरोसे

खूब सभ्यता आयल अछि ई
लोक लाज भगवान भरोसे

देह ठठा कऽ करू किसानी
आ अनाज भगवान भरोसे

अपना भरि सब ब्योंत भिराऊ
किंतु भाँज भगवान भरोसे

एहि गजलक पहिल शेरक पहिल पाँतिमे आठ टा दीर्घ अछि। दोसर पाँतिमे आठ टा दीर्घ अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिमे सात टा दीर्घ आ एकटा लघु (तँ) अछि। हमरा लगैए शाइर तँ शब्दकेँ दीर्घ मानि लेने छथि जे कि गलत अछि। पं. गोविन्द झाजी अपन व्याकरणक पोथीमे एहन शब्दकेँ लघुए मानने छथि जे कि सर्वथा उचित तँइ एहि गजलमे सेहो ई लघु हएत। कोनो लघुकेँ दीर्घ मानि लेबाक परंपरा गजलमे तँ नै छै मुदा मैथिली गजलमे हमरा लोकनि संस्कृतक नियमक अनुसार अंतिम लघुकेँ दीर्घ मानै छी मुदा एहि गजलमे तँ बीचक लघुकेँ दीर्घ मानल गेल अछि जे दूनू परंपरा (गजल आ संस्कृत) हिसाबें गलत अछि। दोसर



पाँतिमे आठ टा दीर्घ अछि। तेसर शेरक दूनू पाँतिमे आठ-ठ दीर्घ अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिमे सात टा दीर्घ आ एकटा लघु अछि (कऽ) एहिठाम हम दोसर शेरक पहिल पाँति लेल जे हम बात कहने छी तकरे बुझू। दोसर शेरमे आठ टा दीर्घ अछि। पाँचम शेरक दूनू पाँतिमे आठ-आठ टा दीर्घ अछि। एहि गजलक रदीफ "भगवान भरोसे" अछि आ काफिया "आ" ध्वनि संग "ज" वर्ण अछि जेना काज-सुराज, ब्याज, लाज, अनाज मुदा पाँचम शेरक काफिया अछि "भाँज" जे कि गलत अछि। "भाँज" केर ध्वनि "आँ" केर ज छै मुदा मतलामे "आ" ध्वनिक संग ज छै। तँइ पाँचम शेरक काफिया गलत अछि। ई गजल बहरे मीरपर आधारित अछि जाहिमे जकर नियम अछि जे "जँ कोनो गजलमे हरेक मात्रा दीर्घ हो तँ ओकर अलग-अलग लघुकेँ सेहो दीर्घ मानल जा सकैए। मुदा बहरे मीरक हिसाबसँ सेहो एहि गजलमे कमी अछि।

2

फोड़त आँखि दिवाली आनत
कान काटि कनबाली आनत

अहींक हाथ पयर कटबा लय
टाका टानि भुजाली आनत

देश प्रेम केर डंका पीटत
केस मोकदमा जाली आनत

पेट बान्हि कऽ करू चाकरी
एहने आब बहाली आनत

पूरा पूरी दान चुका कऽ
सबटा डिब्बा खाली आनत

एहि गजलक पहिल आ दोसर शेरक हरेक पाँतिमे आठ-आठ टा दीर्घ अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिमे एकटा लघु फाजिल अछि तेनाहिते दोसर पाँतिमे सेहो एकटा लघु फाजिल अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिमे छह टा दीर्घ आ दू टा लघु अछि। कऽ शब्दक विवेचना उपर जकाँ रहत। दोसर पाँतिमे "ए" शब्दकेँ लघु मानि

लेल गेल अछि जे कि हमरा हिसाबें उचित नै। पाँचम सेरक पहिल पाँतिमे सात टा दीर्घ आ एकटा लघु अछि। कऽ लेल उपरके विवेचना देखू। दोसर पाँतिमे आठ टा दीर्घ अछि। एहि गजलक काफिया ठीक अछि। ई गजल बहरे मीरपर आधारित अछि जाहिमे जकर नियम अछि जे "जँ कोनो गजलमे हरेक मात्रा दीर्घ हो तँ ओकर अलग-अलग लघुकँ सेहो दीर्घ मानल जा सकैए। मुदा बहरे मीरक हिसाबसँ सेहो एहि गजलमे कमी अछि।

3

लाख उपलब्धिसँ ओ घेरा गेल अछि
बस हृदय आदमी के हेरा गेल अछि

सब समाजक चलन औपचारिक बनल
लोक संबंधसँ आन डेरा गेल अछि

सबटा चेहरा बनौआ अपरिचित जकाँ
मूल चेहरा ससरि कऽ पड़ा गेल अछि

भोरसँ साँझ धरि फूसि पर फूसि थिक
लोक अपने नजरिसँ धरा गेल अछि

देशक सोना पाँखि बनत एक दिन
फेर अनचोके मे ई फुरा गेल अछि

एहि गजलक पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2122-1122-2212 अछि आ दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2122-1222-2212 अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2122-1221-2212 अछि आ दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2122-1121-22212 अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2121-2122-12212 अछि आ दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2121-2122-12212 अछि। चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 211212212212 अछि आ दोसर पाँतिक 212212112212 अछि। पाँचम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 22222112212 अछि आ दोसर पाँतिक 212222212212 अछि। एहि गजलक तेसर, चारिम आ पाँचम

शेरक काफिया गलत अछि। एहि गजलकेँ हमरा बहरेमीरपर मानबासँ आपत्ति अछि आ से किए ई पाटक लोकनि मात्राक्रम जोड़ि देखि सकै छथि जे अलग-अलग लघु जोड़लाब बादो लघु बचि जाइत छै। तँइ हमरा आपत्ति अछि संगे-संग ई गजल आर कोनो बहरपर आधारित नै अछि सेहो स्पष्ट अछि।

4

डिब्बा सन सन शहरक घर अछि
पानि हवा मे मिलल जहर अछि

गाम जेना बेदखल भऽ रहल
बाध बोन धरि घुसल शहर अछि

आजुक युगमे कोना पकड़बै
चोर साधु मे की अंतर अछि

देश बनल शो केश बजारक
जनतंत्रक बेजोड़ असर अछि

अजब दौर अछि लक्ष्य निपत्ता
दिशा हीन ई भेड़ सफर अछि

मतलाक दूनू पाँतिमे आठ टा दीर्घ अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिमे आठ टा दीर्घ आ एकटा लघु अछि। दोसर पाँतिमे आठ टा दीर्घ अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिमे आठ टा दीर्घ आ एकटा लघु अछि। दोसर पाँतिमे आठ टा दीर्घ अछि। चारिम आ पाँचम शेरक दूनू पाँतिमे आठ आठ टा दीर्घ अछि। एहि गजलमे आएल "भेड़ सफर" शब्द युग्मपर आगू चलि भाषा खंडमे चर्चा हएत। ई गजल बहरे मीरपर आधारित अछि जाहिमे जकर नियम अछि जे "जँ कोनो गजलमे हरेक मात्रा दीर्घ हो तँ ओकर अलग-अलग लघुकेँ सेहो दीर्घ मानल जा सकैए। एहि गजलक मतलाक पहिल पाँतिक काफिया "घर" केर उच्चारण हिंदी सन कएल जाए तखने सही हएत अन्यथा मैथिली उच्चारण हिसाबें गलत हएत। बाद बाँकी शेरक काफिया मतलाक काफियापर निर्भर करत तँइ ओकर विवेचना हम नै क' रहल छी।

नरेन्द्रजीक चारि टा हिंदी गजल जे कि हुनक फेसबुकक वालसँ लेल गेल अछि----

1

यह जो चौपट यहां का राजा है
कुछ नहीं वक़्त का ताकाजा है

हम लड़ाई से बहुत डरते हैं
क्यूं कि कुछ घाव अभी ताजा है.

देश उनके लिए खिलौना है
हमको इस बात का अन्दाजा है

जैसे चाहे इसे बाजाते हैं
गोकि जनतंत्र एक बाजा है

अब उठा है तो धूम से निकले
यारो आशिक का ये जनाजा है

एहि गजलक पहिल पहिल आ दोसर दूनू शेरक शेरक मात्राक्रम 2122-12-1222 अछि। एहि शेरक दोसर पाँतिमे शायद टाइपिंग गलती छै तँइ सही शब्द "तकाजा" हम मानलहुँ अछि। दोसेर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2122-12-1222 आ दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2122-112222 अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2122-12-1222 अछि आ दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2122-12-2222 अछि। चारिम शेरक पहिल आ दोसर दूनू शेरक मात्राक्रम 2122-12-1222 अछि। एहि शेरक दोसर पाँतिमे शायद टाइपिंग गलती छै तँइ सही शब्द "बजाते" हम मानलहुँ अछि। पाँचम शेरक दूनू पाँतिक मात्राक्रम 2122-12-1222 अछि। बहरमे जतेक मान्य छूट छै से लेल गेल अछि। कुल मिला देखी तँ एहि गजलक दूटा शेर बहरसँ खारिज अछि (दोसर आ तेसर)। एहि गजलमे काफिया ठीकसँ पालन भेल अछि।

2

क़यामत ऐन अब दालान पर है
नज़र दुनिया की रौशनदान पर है.

न जाने रौशनी आयेगी कब तक
अभी तो तीरगी परवान पर है.

पिघल जाता है उनके आँसुओं पर
मेरा गुस्सा दिले नादान पर है.

शगल उनके लिए है शायरी भी
मगर मेरे लिए तो जान परहै.

मुहब्बत की वकालत करने वाला
अभी नफ़रत की इक दूकान पर है.

एहि गजलक हरेक शेरक हरेक पाँतिमे 1222-1222-122 मात्राक्रम अछि। बहरमे जतेक मान्य छूट छै से लेल गेल अछि। एहि गजलक काफिया सेहो ठीक अछि।

3

बाढ़ में लोग बिलबिलाते हैं
रहनुमा बाढ़ को भुनाते हैं

घोषणाओं पे घोषणाएं हैं

नाव वह काग़ज़ी चलाते हैं

इस तरफ़ भुखमरी का आलम है
और वह आँकड़े गिनाते हैं

फंड जो भी जहां से आता है
खुद ही वो बाँट करके खाते हैं

साल दर साल बाढ़ आ जाये
दरअसल ये ही वो मनाते हैं

एहि गजलक हरेक शेरक हरेक पाँतिमे 2122-12-1222 मात्राक्रम अछि। बहरमे जतेक मान्य छूट छै से लेल गेल अछि। एहि गजलक काफिया सेहो ठीक अछि।

4

आकाश से टपके हुए किरदार नहीं हैं
हम भी मक़ीन हैं किरायेदार नहीं हैं |

उनके इरादों की भी मालूमात है हमें
ऐसा नहीं कि हम भी ख़बरदार नहीं हैं

वह नाम हमारा मिटायेंगे कहाँ कहाँ
बुनियाद की हम ईंट हैं दीवार नहीं हैं |

इंसान हैं अपनी हदों का इल्म है हमें
हम आपके जैसा कोई अवतार नहीं हैं |

हम अपनी मुहब्बत की नुमाइश नहीं करते
रिश्ते निभाते हैं दुकानदार नहीं हैं |

पढ़ना ही अगर हो तो पढ़ो इत्मीनान से
अदबी किताब हैं कोई अख़बार नहीं हैं |

एहि गजलक पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2212-2212-221122 अछि। दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2212-1212-221122 अछि। दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम 2212-2212-221212 अछि। दोसर पाँतिक मात्राक्रम 2212-122-122-1122 अछि। बहरमे जतेक मान्य छूट छै से लेल गेल अछि मुदा तइ बादो ई गजल बहरमे नै अछि। मतलाक दूनू शेरेमे एकरूपता नै अछि। तँइ हम मात्र दू शेरक तक्ती केलहुँ अछि बाद-बाँकी शेरक विवेचना पाठक बुझिये गेल हेता। काफिया सेहो गलते अछि।

बहरक हिसाबसँ नरेन्द्रजीक गजल--

चारू मैथिली गजलकेँ देखल जाए तँ ई स्पष्ट अछि जे नरेन्द्रजी अधिकांशतः बहरे मीरपर आश्रित छथि आ ताहूमे कतेको ठाम हूसल छथि। जखन कि बहरे मीर बहुत आसान बहर छै आ एहि बहरमे छूट बहुत छै। तेनाहिते जँ चारू हिंदी गजलक बहरकेँ देखल जाए ई स्पष्ट होइए जे नरेन्द्रजी बहरे मीरक अतिरिक्त आन बहर सभपर सेहो हाथ चलबै छथि आ ओहूमे कतेको स्थानपर हूसल छथि। तथापि ई उल्लेखनीय जे आनो बहरपर ओ गजल लीखि सकै छथि। नरेन्द्रजी मैथिली-हिंदीक देल उपर बला गजलक बहर संबंधमे हमर ई स्पष्ट मान्यता अछि जे नरेन्द्रजी मात्र लयकेँ बहर मानि लै छथि जखन कि लय आ बहरमे अंतर छै। लय मने गाबि कऽ, गुनगुना कऽ। लयपर लिखलासँ केखनो बहर सटीक भैयो सकैए आ केखनो नहियो भऽ सकैए।
बहर ओ काफियाक आधारपर नरेन्द्रजीक गजलकेँ एकै बेरमे हम गलत नै कहि सकै छी कारण मैथिलीक कथित गजलकार सभसँ बेसी मेहनति नरेन्द्रजी अपन गजलमे केने छथि आ जँ ई थोड़बे मेहनति करतथि वा करता तँ हिनक गजल एकटा आदर्श गजल भऽ सकैए। ओना एहि बातक संभावना कम जे ओ एहि तथ्यकेँ मानताह। करण वएह जिद जे व्याकरण कोनो जरूरी नै छै। रचनामे भाव प्रमुख होइत छै आदि-आदि।
मैथिलीमे नरेन्द्रजीक गजल अपन पीढ़ीक अधिकांश गजलकार (सरसजी, तारानंद वियोगी, रमेश, देवशंकर

नवीन एवं ओहने गजलकार) सभसँ बेसी ठोस गजल छनि से मानबामे हमरा कोनो शंका नै मुदा बहर ओ काफियाक हिसाबें पूरा-पूरी सही नै छनि (मने नरेन्द्रजी मात्र अपन समकालीनसँ आगू छथि)। एहिठाम हम नरेन्द्रजीक चारि-चारि टा गजल लेलहुँ मुदा आन ठाम हुनक प्रकाशित वा हुनक फेसबुकपर प्रकाशित मैथिली आ हिंदी गजलक अनुपातसँ ई स्पष्ट अछि जे नरेन्द्रजी मैथिलीमे मात्र संपादकक आग्रहपर गजल लिखै छथि। मने मैथिली गजल हुनकर ध्येय नै छनि। अइ बादों आश्चर्य जे हिंदी गजलमे हुनकर कोनो विशेष स्थान नै छनि। ई बात हम एकटा हिंदी गजल पाठकक तौरपर कहि रहल छी। हुनकर समूहक किछु लोक हुनका भने बिहारक हिंदी गजलकारक लिस्टमे दऽ दौन मुदा वास्तविकता इएह जे हिंदी गजल संसारमे नरेन्द्रजीक कोनो स्थान नै छनि। आ एकरा मात्र राजनीति नै कहल जा सकैए। हिंदी गजलमे एहतराम इस्लाम, नूर मुहम्मद नूर, जहीर कुरैशी सभ पुरान छथि एवं नवमे गौतम राजरिषी, स्वपनिल श्रीवास्तव, वीनस केसरी, मयंक अवस्थी आदि अपन स्थान बना लेला मुदा की करण छै जे नरेन्द्रजी असफल रहि गेला। हम फेर कहब जे हरेक चीजमे राजनीति नै होइ छै। हिंदी गजलक नव शाइर गौतम राजरिषी, स्वपनिल श्रीवास्तव, वीनस केसरी, मयंक अवस्थी आदिक पाछू कोनो संपादकक हाथ नै छलनि मुदा नीक लिखलासँ कोन संपादक नै छापै छै। आ हिनकर सभहँक सभ गजल व्याकरण ओ भाव दृष्टिसँ संतुलित रहै छनि आ तँइ ई सभ बहुत कम समयमे हिंदी गजलमे अपन स्थान बना लेला मुदा नरेन्द्रजी नै बढ़ि सकला आ ताहि लेल मात्र हुनक बहर ओ व्याकरण नै पालन करबाक जिद जिम्मेदार छनि। मैथिली गजलमे तँ ई अपन समकालीन गजलकारसँ आगू बढ़ि जेता मुदा ई हिंदीमे पिछड़ले रहता कारण ओहिठाम बहर सेहो देखल जाइ छै जखन कि मैथिली गजलमे बहर देखानइ आब शुरू भेलैए।

किछु एहन बात जे कि प्रायः हम, सभ आलोचनामे कहैत छियै " मैथिलीक अराजक गजलकार सभ हिंदीक निराला, दुष्यंत कुमार आ उर्दूक फैज अहमद फैज केर बहुत मानै छथि। एकर अतिरिक्तो ओ सभ अदम गोंडवी मुन्नवर राना आदिकेँ मानै छथि। मैथिलीक अराजक गजलकार सभहँक हिसाबें निराला, दुष्यंत कुमार आ फैज अहमद फैज सभ गजलक व्याकरणकेँ तोड़ि देलखिन मुदा ई भ्रम अछि। सच तँ ई अछि जे निराला मात्र विषय परिवर्तन केला आ उर्दू शब्दक बदला गजलमे हिंदी शब्दक प्रयोग केला, तेनाहिते दुष्यंत कुमार इमरजेन्सीक विरुद्ध गजल रचना क्रांतिकारी रूपें केलथि। फैजकेँ साम्यवादी विचारक गजल लेल जानल जाइत अछि। मुदा ई गजलकार सभ विषय परिवर्तन केला आ समयानुसार शब्दक प्रयोग बेसी केला। एहिठाम हम किछु हिंदी गजलकारक मतलाक तक्ती देखा रहल छी (जे-जे मतला हम एहिठाम देब तकर पूरा गजल ओ पूरा तक्ती हमर पोथी मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहासमे देखि सकै छी)---

सूर्यकांत त्रिपाठी निरालाजीक एकटा गजलक मतला देखू--

भेद कुल खुल जाए वह सूरत हमारे दिल में है
देश को मिल जाए जो पूँजी तुम्हारी मिल में है

मतला (मने पहिल शेर)क मात्राक्रम अछि--2122+2122+2122+212 आब सभ शेरक मात्राक्रम इएह रहत। एकरे बहर वा की वर्णवृत कहल जाइत छै। अरबीमे एकरा बहरे रमल केर मुजाइफ बहर कहल जाइत छै। मौलाना हसरत मोहानीक गजल “चुपके चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है” अही बहरमे छै जकर विवरण आगू देल जाएत। ऐठाँ ई देखू जे निराला जी गजलक विषय नव कऽ देलखिन प्रेमिकाक बदला विषय मिल आ पूँजी बनि गेलै मुदा व्याकरण वएह रहलै।

आब हसरत मोहानीक ई प्रसिद्ध गजलक मतला देखू---

चुपके चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है
हमको अब तक आशिक़ी का वो ज़माना याद है

एकर बहर 2122+2122+2122+212 अछि।

आब दुष्यंत कुमारक ऐ गजलक मतलाक तक्ती देखू---

हो गई है / पीर पर्वत /सी पिघलनी / चाहिए,
इस हिमालय / से कोई गं / गा निकलनी / चाहिए।

एकर बहर 2122 / 2122 / 2122 / 212 अछि।

फैज अहमद फैज जीक ई गजलक मतला देखू--

शैख साहब से रस्मो-राह न की
शुक्र है ज़िन्दगी तबाह न की

एहि मतलाक बहर 2122-1212-112 अछि।

आब कने अदम गोंडवी जीक एकटा गजलक मतलाक तक्ती देखू–

ग़ज़ल को ले / चलो अब गाँ / व के दिलकश /नज़ारों में
मुसल्सल फ़न / का दम घुटता / है इन अदबी / इदारों में

एकर बहर 1222 / 1222 / 1222 / 1222 अछि।

एहिठाम हम ई मात्र भाव ओ कथ्यसँ संचालित गजलकारक कुतर्कसँ बँचबा लेल देलहुँ अछि। जखन दुष्यंत कुमार सन क्रांतिकारी गजलकार बहर ओ व्याकरणकेँ मानै छथि तखन नरेन्द्रजी वा आन कथित क्रांतिकारीकेँ व्याकरणसँ कोन दिक्कत छनि सेनै जानि।

भाव, कथ्य, विषय ओ भाषाक हिसाबसँ नरेन्द्रजीक गजलक सीमा---

उप शीर्षकमे "सीमा" एहि दुआरे लिखलहुँ जे भाव, कथ्य ओ विषय लेल कोनो रोक-टोक नै छै जे इएह विषयपर लिखल जेबाक चाही वा ओहि विषयपर नै लिखल जेबाक चाही। अइ ठाम देल गेल नरेन्द्रजीक मैथिली-हिंदी गजलक भाव ओ भाषासँ स्पष्ट भेल हएत जे नरेन्द्रजी चाहे मैथिलीमे लिखथि वा हिंदीमे हुनकर विषय मार्क्सवादी विचारधाराक आगू पाछू रहैत छनि। ओना ई खराप नै छै मुदा दुनियाँ बहुत रास "भूख"सँ संचालित छै चाहे ओ पेटक हो, जाँघक हो कि धन, यश केर हो। जतबे सच पेटक भूख छै ततबे आन भूख सेहो। तँइ एकटा भूखक साहित्यकेँ नीक मानल जाए आ दोसर भूखकेँ खराप से उचित नै। नरेन्द्रजीकेँ सेहो कोनो विपरीत लिंगी आकर्षित केने हेथनि आ कोहबरमे हुनकर करेज सेहो धक-धक केने हेतनि। ओना विचारधाराकेँ महान बनेबा लेल ओ कहि सकै छथि जे ने हमरा कोनो विपरीत लिंगी आकर्षित केलक आ ने कोबरमे करेज धक-धक केलक। ई हुनकर सीमा सेहो छनि हुनकर विचारधाराक सेहो। अइ ठाम एकटा महत्वपूर्ण प्रश्न राखए चाहब जे नरेन्द्रजी वा हुनके सन क्रांतिकारी गजलकार सभ व्याकरणक ई कहि विरोध करै छथि जे व्याकरण कट्टरताक प्रतीक थिक मुदा आश्चर्य जे विषय ओ भावक मामिलामे नरेन्द्रजी वा हुनके सन गजलकार सभ कट्टर छथि। हमरा जतेक अनुभव अछि ताहि हिसाबसँ हम कहि सकैत छी कथित रूपसँ छद्म मार्क्सवादी सभ दोहरा बेबहार करै छथि अपन जीवन ओ साहित्यमे। व्याकरणक कट्टरताक विरोध आ विषय ओ भावक कट्टरताक पालन इएह दोहरा चरित्र थिक। एकै कथ्यपर कोनो विधाक रचना लिखलासँ ओहिमे दोहराव केर खतरा तँ होइते छै संगे संग पाठक इरीटेट सेहो भ' जाइत छै। कोनो रचना जखन

पाठके लेल छै तखन पाठकक रुचिक अवमानना किए? हँ एतेक सावधानी लेखककेँ जरूर रखबाक चाही जे पाठकक अवांछित माँग जेना अश्लीलता, दंगा पसारए बला रचना नै लीखथि। एक बेर फेर हम हिंदीक संदर्भमे कहए चाहब जे हिंदी गजलक कथ्य बहुत विस्तृत छै। हिंदी गजलमे साम्यवादी विचारधारा बला गजलक अतिरिक्त आनो विषयपर गजल छै आ हमरा हिसाबें नरेन्द्रजी हिंदी गजलमे नै बढ़ि सकला आ ताहि लेल बहर ओ व्याकरण संग एकै कथ्यपर लिखबाक जिद सेहो जिम्मेदार छनि। एहिठाम देल नरेन्द्रजीक मैथिलीक चारिम गजलमे "भेड़ सफर" मैथिलीमे अवांछित प्रयोग अछि। नरेन्द्रजीक भाषा प्रयोग खतरनाक अछि। हम जानै छी जे एना लिखलासँ लोक हमरा शुद्धतावादी मानए लागत मुदा हम ई चिंता छोड़ि लिखब जे हरेक भाषामे आन भाषाक शब्दक प्रयोग हेबाक चाही मुदा एकर मतलब नै जे सभ शब्दक प्रयोग मान्य भऽ जेतै। उदाहरण दैत कही जे मैथिलीमे "वफा" शब्द प्रचलित नै अछि मुदा "वफादार" शब्द बहुप्रचलित अछि। एहिठाम प्रश्न उठैत अछि जे जखन वफा शब्दक प्रचलन नै तखन वफादार कोना प्रचलित भेल। ई बात शुद्ध रूपसँ आम जनताक बात छै। आम जनताक जीह आ संदर्भमे "वफा" शब्द नै आबि सकलै जखन कि वफादार उच्चारणक हिसाबसँ आ संदर्भक हिसाबसँ प्रयोग होइत रहल अछि।

निष्कर्ष--- नरेन्द्रजी गजल बहर ओ काफियाक हिसाबसँ दोषपूर्ण तँ अछि मुदा मैथिलीक अपन समकालीन ओ परवर्ती गजलकार यथा सरसजी, रमेश, तारानंद वियोगी, विभूति आनंद, कलानंद भट्ट, सुरेन्द्रनाथ, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, राजेन्द्र विमल संगे एहने आन गजलकार सभसँ बेसी ठोस अछि। हिनक हिंदी गजल सभ सेहो बहर ओ काफियाक हिसाबसँ दोषपूर्ण अछि आ ओहिठाम हिनकासँ पहिने बहुत रास व्याकरण ओ भाव बला गजलकार अपन मूल्याकंन लेल प्रतीक्षारत छथि तँइ हिंदी गजलमे हिनकर टिकब बहुत मोश्किल छनि। विश्वास नै हो तँ हिंदी गजलक गंभीर पाठक बनि देखि लिअ। जँ नरेन्द्रजी व्याकरण पक्षकेँ सम्हारि लेथि आ आनो विषयपर गजल कहथि तँ निश्चित ई बहुत दूर आगू जेता। आ जेना कि उपरक विवेचनसँ स्पष्ट अछि जे हिनका बेसी मेहनति नै करबाक छनि। किछु अहम् ओ व्याकरणकेँ हेय बुझबाक चक्करमे हिनक नीको गजल दूरि भेल अछि। ओना हम उपरे आशंका बता देने छी जे आने कथित क्रांतिकारी जकाँ ईहो व्याकरणकेँ बेकार मानता।

नोट---- 1) एहि समीक्षामे जतेक संदर्भ लेल गेल अछि से हमर पोथी "मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास"सँ लेल गेल अछि तँइ कोनो प्रकारक संदर्भ जेना पं गोविन्द झाजीक कोन पोथीक कोन पृष्ठपर चंद्रबिंदु युक्त स्वर लघु होइत छै आदि जनबाक लेल ओहि पोथीकेँ पढ़ू।
2) बहरक तक्तीमे जँ कोनो असावधानी भेल हो तँ पाठक सभ सूचित करथि। हम ओकरा सुधारब।

२.

प्रणव कुमार

मैथिली कथामे स्त्री

उपरोक्त विषय पर चर्चा केनाय एत्तेक हल्लुक बात नै अछि, तथापि हम जे किछु लेखक केर रचना पढलहुँ अछि ओय माह्क किछ स्त्री पात्र वा नायिका क भूमिका के विवेचना के प्रयत्न क रहल छि।

सर्वप्रथम हम यात्री बाबा के उपन्यास 'पारो' के नायिका पार्वती उर्फ़ पारो केर चर्चा कय रहल छी। पारो के पहिल परिचय पाँच छ: वर्षिय, श्याम वर्णिय बुचिया के रूप मे कैल गेल अछि, आ कथा के मार्मिक अन्त १७-१८ वर्षक पारो के अकाल मृत्यु क घटना के संदर्भ सँ होय अछि। मैथिली कथा मे स्त्री पात्र सब मे पारो के चरित्र एकटा एहन चरित्र अछि जे पाठक के हृदय स्थली में भावना के तीव्र प्रवाह त लैए आबै अछि संगहि मिथिला क्षेत्र में ७०-८०-९०के दशक में(आ संभवत: किछु एखनो) स्त्री जीवन के दशा के कैएक टा परत खोलि के राखि दैत अछि। २-४ घंटा में पारो सन नायिका के नेन्पन केर खेलौर सँ ल के किशोरी पारो के चमत्कृत क दै बला बुद्धि, विवेक, मर्यादा के निभाब वाली धिया आ अंतत: समाजक दोष के कारणे अपरिपक्व अवस्था में अकाल मृत्यु के वरण करैत पारो के झलक कोनो चलचित्र जेकाँ पाठक के आँखि के आगा एक के बाद एक क के निकलि जाय अछि।

पारो नेनपने स चंचल छलीह आ किशोरावस्था में पहुँचैत पहुँचैत लोक व्यवहार आ ग्यान मे पारंगत भ गेलि। कथावाचक कहै छैथ जे ओ पारो से १-२ वर्षक जेठ छलाह मुदा तैयो लोक व्यवहार के जे बात हुनका इंटर में गेला पर बुझ एलैन से पारो ओहि बयस में बुझै छलीह जखन कथावाचक आठमी में छलाह। ऐ प्रकारे यात्रीजी ई बात के इंगित करै छैथ जे मिथिला के नारी में मानसिक परिपक्वता बहुत जल्दी आबि जाय अछि। पारो पढ़बा लिखबा, कथा-कविता में सेहो बेस तेज छलीह, स्वाईत हिनकर पिताजी हिनका खूब पढैबा के इच्छा रखै छलाह, मुदा से हिनकर माय के पसिन्न नै छल। ई मैथिल समाज के एकटा आर चरित्र चित्रण अछि जेकरा यात्रीजी ऐ कथा में खोलि क देखेलथिन्ह अछि। ई चरित्र कमोबेस आजुक मैथिल समाज में सेहो व्याप्त अछि, स्वाइत मिथिला क्षेत्र में स्त्री साक्षरता दर कदाचित सगर देश में सभसँ निम्न स्तर पर अछि। औपचारिक शिक्षा नैहो भेंटला पर पारो रामायण, गीता, अमरकोष, हितोपदेश आदि ग्रंथ के घोषि लैत छथिन।

प्रेम विवाह आ विवाह सँ पूर्व अपन जिवनसंगी के निक से जानि लै के इच्छा आ ऐ से जुडल दिवास्वप्न सेहो पारो के मोन मे उचरै छैन्ह आ एकरा ओ कथावाचक के जाहिर सेहो कर छथिन जे "बिरजू भैया, भाइये-बहिन में जँबिआह दान होयतैक त कतेक दिव होयतै। कत' कहाँदन अनठिया के जे लोक उठा ल अबै अछि से कोन बुधियारी!" किशोरी पारो के मोन मे पुरुष जाति के प्रति जे आशंका छल से ओकर लिखल कविता के ऐ लाइन में सेहो व्यक्त होय अछि:

सखी हम करमहीन

कोन विधि खेपब दिन

कोन विधि खेपब राति

निट्ठुर पुरूख क जाति

कोन विधि काटभ काल

हैत हमर की हाल।

परिस्थिति के मारल पारो के विवाह किशोरावसथे में अपना सं दुना उमिर के दुत्ति वर सँ भ जाय अछि। कथा के अंत होय अछि शारिरिक रूप सँ अपरिपक्व पारो के प्रसव के कारण भेल अकाल मृत्यु सँ। इ भाग पढैत काल पाठक के कोंरह फ़ाटि जाय से स्वभाविक अछि। ऐ प्रकारे देखल जाय त पारो एकटा तेजस्विनि मिथिलानी छथि जे मैथिल समाज में व्याप्त दोष के कारण जिबैत अपन अभिलाषा के समेट क रखै छथिन आ अंतत: अकाल मृत्यु के प्राप्त हौय छथिन।

आब अबै छी प्रो० हरिमोहन झा के रचना पर। ओना त हिनकर कथा-उपन्यास सब में नाना प्रकार के स्त्री पात्र सब भरल परल अछि, मुदा हम एतय हिनकर उपन्यास कन्यादान आ द्विरागमन के पात्र बुच्ची दाई आ मिस बिजली बोस के चर्चा क रहल छि। बुच्ची दाई के चरित्र जत अपन समय के मैथिल समाजक स्त्री क वास्तविकता अछि त मिस बिजली कदाचित ओ चरित्र अछि जेहन लेखक मैथिल स्त्री के भविष्य देखय चाहै छलाह। बुच्ची दाई एकटा एहन अबोध बालिका के चरित्र अछि जिनका मानसिक आ शारिरिक परिपक्वता से पहिनेहे बिआह क देल जाय छैन्ह आ ताहि कारणे ऐ संबंध के बुझ आ निभाब मे ओ अक्षम छलीह। मुदा रूप आ गुण सँ पूर्ण बुचिया समय बितला पर आ सिखौला पढौला पर आधुनिकता के लिबास ओढि लै अछि। मिस बिजली बोस काशी विश्वविद्यालय में पढै वाली ओ कन्या छलीह जे कुशाग्र बुद्धि के संगे ठाँय पर ठाँय बाजय के कौशल सेहो राखै छलीह आ एहि कौशल के बले सीसी मिश्र के दर्प चुड-चुड करै छथिन आ हुनका हुनकर गलति के एहसाह दियाबै छथिन।

दू टा पुरूष लेखक के बाद दू टा स्त्री लेखक के रचना में स्त्री पात्रक चर्चा करै चाहै छी। सर्वप्रथम लिली रे के कथा उपसंहार के नायिका 'अपर्णा' के चर्चा क रहल छी। लिली रे अपन विभिन्न रचना में स्त्री पात्र के मार्फ़त ऐ बात के उल्लेख कएने छथि जे मैथिल समाज स्त्री के विवाह, प्रेम-संबंध आदि के ल क अनुदार रहल अछि आ औखन तक अनुदार अछि। जे महिला वर्ग पितृसत्तात्मक समाज मे युग युग सँ सीदित आ प्रताडि.त होइत रहल छथि, सेहो वर्ग अपन समाजक दोसर सदस्य के प्रति अनुदार बनल रहलीह, सहानुभुति के अभाव रहलनि। शिक्षित आ आधुनिक मानल जाय बला समाजक पुरूष वर्गक मानसिकता में परिवर्तन नै आयल। 'अपर्णा' के चरित्र एहि अन्तरविरोधक मर्मस्पर्शी उद्घाटन अछि। अपर्णा के प्रति हुनक बहिनोइ विनयक आचरण भावनात्मक नहि, शोषणात्मक छैन। ओ डाक्टरी के प्रवेश परीक्षाक मार्गदर्शनक नाम्पर अपर्णाके अपन मोह जाल में फ़ाँसि लैत छथि। अपर्णा के बहिन वसुधा के आचरण इर्ष्याभाव सँ भरल अछि ओ अपन पति के लंपटता के दोष नै दैत अछि, अपर्णा के दोषी मानैत अछि। ओ अपर्णा के तेज से जरैत अछि। पित्ति लग शिकायत क अपन छोट बहिन के प्रति घरक सदस्य में घृणा

घनिभूत क दैत अछि। घौल भेल पिता अपर्णा के दंडित करबाक हेतु कठोरतम निर्णय करैत हुनकर पढाई छोरा एकटा मजदूर संगे साहि दैत छथिन। अपर्णा डाक्टर नै बनि सकलि मुदा अपन परिश्रम आ विद्या के बल पर सासुर के खूब सुखी-सम्पन्न बना दैत छथिन। मुदा विडंबना अछि जे अपर्णाहिक परिश्रम सँ गिरथाइनि बनलि ननदि सब सब सेहो हुनकर कुचेष्टा करै अछि। अपर्णा त्यागमयि छथि, सेवाभावि छथि, सहानुभूतिशील छथि, अपन मोनक व्यथा कौखन प्रकट नै होमय दै छथिन। सबसँ बढि के धैर्य आ स्वाभिमान छैक। इ स्वाभिमान पतिक देहावसानक जिग्यासा मे आएल पिता केँ कहल वचन में ('एहिठाम हमरा सब मानैत अछि। अहाँस बहुत बेसी!') सेहो स्पष्ट अछि।

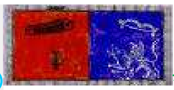
अंतिम स्त्री चरित्र जेकर हम चर्चा एखन क रहल छि ओ अछि डा० शेफ़ालिका वर्मा के कथा 'मुक्ति' के नायिका 'मेहा'। मेहा कोमल सदृश्य भाव वाली तेजस्विनी कन्या छथिन जिनका समाजक देखावटी उत्थान आ इळिटनेश नै पसिन्न छैन्ह। ओ अपन माँ के महिला-मुक्ति आंदोलन आ ओय सँ जुड.ल सदस्या सब के आलोचक छथिन जे महिला-मुक्ति के नाम पर बड.का बड.का जुलूस त निकालै छथिन मुदा ई बात के अन्तर्बोध नै छैन जे महिला के मुक्ति चाहि कथि सँ। ओ अब अपनहि जानैत या अन्जान मे नारी के प्रतारणा के बढावा दै बला काज करै छथिन। एहि क्रम मे मेहा के विवाह एकटा प्रोफ़ेसर साहब से होय बला रहै छैन जे वास्तव मे पकरौआ विवाह छल आ तेकर बदला लै लेल प्रोफ़ेसर साहब मेहा संग हुनक पांच टा सखि के सिनुरदान क दैत छथिन। मुदा तेजस्विनि मेहा ऐ विकट परिस्थिति के अपन कुशाग्रता आ तेज से स्म्हारि लैत छथिन, ओ ऐ विवाह के अमान्य साबित क दैत छथिन आ प्रोफ़ेसर साहब के मुक्त करैत बजै छथिन जे "हम एहि विवाह के नै मानैत छी आ नै हमर संगी मानत। हम सब एत्तेक गेल-गुजरल नै छी । नारी के नियति मात्र विवाह छैक मुदा हम एकरा नै मानैत छी। विवाह स्त्री पुरूषक समर्पण थिक। जे बलजोरी देल जाय आ जे एक्कहि संगे पाँच गोटे के देल जाय ओ सिन्दूर धर्मक दृष्टिए मान भ जाए मुदा हम कहियो नै मनब।

प्रोफ़ेसर साहब मेहा के ऐ तर्क-वितर्क से अवाक भ गेल। ओ एकटा अग्यात सम्मोहन सँ आविष्ट भ मेहा से अपन अपराध लेल क्षमा मांगैत छथिन आ हुनका अपन जीवन संगिनि बनाब के वचन दैथ छथिन।

एहि प्रकारे हम देखैत छि जे जत पुरूष लेखक सब स्त्री पात्र के द्वारा समाज मे स्त्री के अवस्था आ हुनका प्रति व्याप्त कुप्रथा पर चोट करै छथिन ओतय महिला लेखिका स्त्री समाजुक स्थिति के सुक्ष्म विवेचना करैत छथिन।

एकटा जन्मेजय कथा (व्यंग्य)

ओना त महाभारतSक सबटा कथा सब युग के लेल प्रासंगिक रहल अछि, एहि क्रम में राजा जन्मेजयक एकटा कथा सेहो आजुक



समय के हिसाब सं खूब प्रासंगिक अछि.राजा जन्मेजय अर्जुन के पोता आ राजा परीक्षित के बेटा आ उत्तराधिकारी छलाह. एक बेर राजा परीक्षित कलयुगक प्रभाव सं ग्रस्त

भS मरल सांप केर माला बनाय ऋषि शमीक के गर में धS क हुनकर अपमान कदेलखिन. ऐ अपमान सं ऋषि के बेटा श्रृंगी

पित्तिया गेलाह. ओ पित्ते आमिल पिने छलाह आ अपन बाबू के अपमानक

बदला लेबय के ठानि नेने छलाह. एहि के लेल ओ नागराज तक्षक के बजाय, राजा परीक्षित केठिकाना लगाबय के सुपारी द देलखिन.

बस तखन की अर्जुन सं पराजित आ अपमानित तक्षक एहने मौक़ा के बाट जोहैत छलाह, स्वाइत ओ ऐ सुपारी उठब में को नो कौताही

नै रखलाह आ सही मौक़ा पाबि ओपरीक्षित के 'मर्डर' क देलाह.

परीक्षित केर मर्डर के बाद हुनकर बेटा जन्मेजय गद्दी पर बैसलाह. बापक ह्त्या के सभटा पिहानी जानलाक बाद हिनका मो न में

बदलाक भावना प्रज्ज्वलित भ गेलैन आ ओ तक्षकसहित सभटा नाग के समूल नष्ट करै के ठानि लेलैथ आ ऐ के लेल सर्प य ज्ञ करेलैथ

मुदा ऐ 'मर्डर' के मास्टरमाइंड यानी ऋषि श्रृंगी के छोड़ि देलखिन.

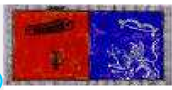
"आब एकटा 'बाबा' से के पंगा लै! बदले लै के छैक त तक्षके सं ल लैत छी आ ओकर समूल नाश क दैत छी."
(भ सकै अछि एहने किछु विचार हुनका मोन में आयल हेतैन, यद्यपि ऐ तरहक बात महाभारत मेंआधिकारिक रूप सं कतौ ने

देखलहुँ पढ़लहुँ अछि).हं त भेल एना की सर्प यज्ञ में एक
एक क के सभटा निर्दोष सांप सब खसि खसि क भस्म होमय लागल.

ओकरा सब के पतो नै छल जे ओकर सब के दोष की छैक जेकर सजा ओकरा सब के भेंट रहल छल. खैर.हजारोलाख सां प के मुइला के

बाद जखन तक्षक केर पारि एलै तखन पता नै ओ कुन देवता पित्तर से सेटिंग क के आस्तिक नामक एकटा ब्राम्हण के

भेज के सर्प यज्ञ रुकवा देलक आ तक्षक केर जान बचि गेल.कहल जाय छैक जे एकर बाद जन्मेजय आ तक्षक दुनू बर्षो-बरख जिबैत रहलाह आ अपन-अपन राज पाट के भोग केलाह. कहाँदैन कहल जायछि जे तक्षक केर बाद में इन्द्रक



दरबार में सेहो बड़ड निक पैठ बनि गेलछल. आ ऐ तरहे देखल जाय त मास्टरमाइंड ऋषि श्रृंगी, एक्सीक्यूटर तक्षक आ बद ला लै पर

उतारू जन्मेजय के त किछु नै भेल मुदा ऐ सब प्रक्रिया में मारल गेल बेचारा हजारोलाख निर्दोष सांप सभ जेकर एकमात्रअप राध

जे ओ तक्षक के समुदाय से छलाह.

उपसंहार: आजुक समय में एहि कथा के प्रासंगिता चिन्हियौ आ विचार करियौ, अहाँ बुद्धिजीवी छी

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

दुर्गानन्द मण्डल

लघुकथा

सीख

नान्हियेटा मे बुधुआ बुढ़िया दादीकेँ एक दिन तंग-तबाह केने छल।

“दाय यइ दाय एकटा खिस्सा कहियौ। नीमन खिस्सा कहियौ। झब-दे कहियौ, नहि तँ ठोँठ दाबि कऽ मारि देब।”

“रउ सरधुआ, छोड़ ने रौ। गरदैन छोड़ ने, नहि तँ मरि जाएब।”

दाय जोरसँ चिचिआ-चिचिआ ई कहैए।

“अरौ बाप रौ बाप। ई छौड़ा हमरा मारि देलक!”

बुधुआ दाइक गरदैन छोड़ि देलक आ जा कऽ दाइक कोरामे बैस जाइए, खिस्सा सुनैले।

दाय खिस्सा शुरू केलैन। एक नगरमे एकटा राजा छेलइ। ओकरा फूलक एकटा बड़का फुलबाड़ी छेलइ। जइमे सभ तरहक फुल रोपल छेलै आ बहुत रास फूल फुलाएलो छेलइ। जइमे एकटा बड़ सुन्दर फूल खिलल छल। नमहर आ सुन्दर सेहो छेलइ। सभ फूल ओकरा राजा-गुलाब कहै छेलइ। रसे-रसे राजा गुलाब आन-आन फूल सभसँ अपन प्रसन्नता पाबि अंहकारी भेल जे छल। ओ एतेक अहंकारी भऽ गेल जे आब ओ आन-आन फूलसँ बातो ने करए चाहै छल। मुदा आन-आन सभ फूल राजा गुलाबक ऐ बेवहारकेँ ओकर नादानी बुझि ओकरा सम्मान दइते रहल।

ओइ राजा गुलाबक जड़िमे एकटा बेश नमहर करिया पाथर गाड़ल छेलइ। अकसरहाँ ओइ करिया पाथरकेँ ओ राजा गुलाब डाँटैत रहै छेलइ। जे तोरा कारण हमर रूप आ सौन्दर्य खराप भऽ रहल अछि। तोँ केतौ किए ने चलि जाइ छेँ।

ओ पाथर कएक बेर राजा गुलाबकेँ समझौलक। जे एतेक घमण्ड नीक नइ होइ छइ। मुदा राजा गुलाब अहंकारमे मातल अकैड़ कहलक-

“अरेकाला पाथर, हमरा आगाँ तोहर कोन तुलना। तूँ तँ हमरा शरणमे पड़ल छेँ।”

समय बीतैत गेल। किछु दिनक पछाइत एक बेकती ओइ फुलबाड़ीमे आएल। घुमैत-घुमैत ओकर नजैर ओइ पाथरपर पड़लै। ओ ओकरा उखाड़ि अपना संग नेने चलि गेल। राजा गुलाबक खुशीक कोनो ठेकान नहि रहलै। ओ सोचए जे नीक भेल ई पाथर ऐठामसँ हटि गेल। अनेरे ई हमर सुन्दरताकेँ खराप करै छल।

समय बीतैत गेल। थोड़बे दिनक पछाइत ओही फुलबाड़ीमे एक आदमी ओइ फुलबाड़ीमे आएल। ओकरा ओ राजा गुलाब फूल खूब नीक लगलै। ओ ओकरा तोड़ि एकटा मन्दिरमे जा भगवानक मूर्तिक चरणमे समर्पित कऽ देलक। राजा गुलाबकेँ ओतए एकदम नीक नै लगै छेलइ। ओकरा अपन पैछला दिन-राति मोन पड़ए लगलै। ओकरा फुलबाड़ीमे भेटए-बला सम्मान सेहो मोन पड़ए लगलै। ताबत ओकरा केतौसँ हँसी सुनाइ पड़लै। ओ गुलाब एमहर-ओमहर चारूकात तकलक मुदा केकरो ने देलक।

ताबत ओकरा एकबेर दिव्य आवाज सुनि पड़लै-

“राजा गुलाब, तूँ एमहर-ओमहर की देखै छेँ। हमरा देख। हम वएह पाथरक मूर्ति छी, जेकरा तूँ ओइ फुलबाड़ीमे तुच्छ बुझि सदिखन कटैत रहै छेलेँ। आइ देख जे तूँ हमरा शरणमे पड़ल छेँ।”

राजा गुलाब तँ आश्चर्यचकित छल। बाजल-

“भाय पाथर, तूँ एतए एलेँ केना?”

ओ मूर्ति रूपी पाथर बाजल-

“सून राजा गुलाब, जे बेकती हमरा एतए अनलक ओ एकटा मूर्तिकार छल। ओ हमरा छेनी-हथौरीसँ तोड़ि-ताड़ि पाथरसँ भगवान बना ऐ मन्दिरमे स्थापित कऽ देलक। आ तूँ..?”

राजा गुलाबआत्म ग्लानिसँ भरल ओइ मूर्ति रूपी पाथरक सामने सिर झूका क्षमा याचना करैत बाजल-

“भाय, अहंकारीक सिर सदिखन निच्चाँ होइते छइ। अत: मानवकेँ अपन अहंकारक त्याग कऽ देबाक चाही। ताकि ओकरा अपन हस्तीक पता रहइ।”

से सुन बौआ रौ बुधुबा, एतए बदमाशी नइ कर। सुन कहबी छै- मेटा दिअ अपन हस्ती यदि मतिवा चाही कि दाना, माटिमे मिल कऽ गुले-गुलजार होइए।

सीख- कखनो फूलक समान नै जीबू, जइ दिन जरूर खिलब आ तोडल जाएब।

जीनाइ यदि छह तँ पाथर बनि जीबह, जइ दिन तराशल जेएब, भगवान बनि जाएब।

बुधुबा तँ तात दाइक कोरमे अलिसा गेल छल।

q

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.१.जगदीश प्रसाद मण्डल- लघुकथा- संकट १.२. जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु - उपन्यासक आरम्भ (आगाँ)

१

१.१.

जगदीश प्रसाद मण्डल

लघुकथा

संकट

चालिस बर्खक पछाइत राधाकान्तकेँ कृष्णकान्तसँ भेँट भेलैन। भेँटो ओहिना नइ भेलैन, कृष्णकान्तसँ राधाकान्त नियारि कऽ भेँट करए आएल छला। प्रणाम-पाती भेला पछाइत कृष्णकान्त पुछलखिन-

“भाय, की हाल-चाल?”

‘की हाल-चाल’कहिकृष्णकान्तअथिति संगीक स्वागत-बात करैमे लगि गेला। कुरसीपर बैइसैत राधाकान्त बजला-

“भाय, की हाल-चाल रहत! संकटमे जिनगी पड़ि गेल अछि..!”

राधाकान्तक बात सुनि कृष्णकान्त अपन विचारकेँ रोकि आँगन जा पत्नीकेँ कहलैन-

“पुरान मित्र एला अछि, तँए आदर-सत्कारमे कमी नइ होइन।”

दिनक एगारह बजेक समय, अगहन मास। ओना, गाम कि इलाकेमे जखन राधाकान्त प्रवेश केला आ खेती-पथारी, उपजा-बाड़ीपर जे नजैर पड़लैन तखनेसँ मने-मन विचारए लगला जे अपन इलाका की छल आ अखन की बनि गेल अछि!

ओना एक परिवार रहितो, जँ परिवारमे अतिथि-अभ्यागत अबै छैथ तँ एकरंग आदर-सत्कार नहियेँ होइत अछि। तेकर कारण अछि जे अभ्यागतो-अभ्यागतमे अन्तर होइते अछि। आ ओ होइए मनुख रूप देख नहि, बनाबटी सम्बन्ध देख। पाहुन एने जे स्वागत-बात परिवारमे होइए ओइसँ अलग सासुरक पाहुन एने होइए। तहूसँ अलग दोस-महीम आ हित-अपेक्षित एने सेहो होइते अछि। खाएर जे होइए, ओ तँ परिवार-परिवारक अपन-अपन बेवहारपर निर्भर अछि। ऐठाम कृष्णकान्त आ राधाकान्तक दोस्तीक सम्बन्ध अछि।

पतिक विचार सुनिते श्यामाक मनमे एलैन जे पुरानो मित्र तँ एक रंगक नहियेँ होइ छैथ। ओहूमे अन्तर अछिए। पहिल ओहन मित्र भेला जे बालपनसँ वृद्धपन धरि एक-रसमे निमाहैत आबि रहला अछि। माने ई जे जहियासँ मित्रता भेलतहियेसँ आबाजाही होइत रहने रंग-रंगक सम्बन्धमे बढ़ोत्तरी भेल रहैए आ दोसर भेल शुरूमे माने जखन मित्रता भेल तैबीच नीक जकाँ मित्रता चलल, मुदा आबाजाही कम रहने सम्बन्ध ओतबेपर अँटैक गेल। सएह राधाकान्त आ कृष्णकान्तक बीच भेलैन।

जहिया सी.एम. कौलेजमे पढ़ैले प्रवेश केलातहियेसँ राधाकान्त आ कृष्णकान्तक बीच मित्रता भेलैन। संजोग एहेन बनल जे कौलेजमे नाओं लिखबए जहिये राधाकान्त पहुँचला तहिये कृष्णकान्तो। दुनू गोरेक

मैट्रिकक परीक्षाक रिजल्ट सेहो एके रंग छेलैन। सेकेण्ड डिवीजनसँ मैट्रिक पास केने रहैथ। ऑफिसमे जाधैर दुनूक एडमिशन भेल ताबे तक अपन-अपन काजमे लागल छला। नाम लिखौला पछाइत जखन दुनू गोरे ऑफिससँ निकलला तखन गप-सप्प भेलैन। ओना, गप-सप्पक दोसरो कारण भेल। दोसर कारण भेल दुनूकेँ डेरा लेब सेहो छेलैन।

कौलेजक गेट टपि दुनू चाहो पीबैले आ गपो-सप्प करैले दोकानपर पहुँचला। खाली टेबुल देख दुनू गोरे एके टेबुलक कुरसीपर बैसला। राधाकान्त कृष्णकान्तकेँ पुछलैन-

“अहाँकेँ घर केतए छी?”

जिला-जबार पुछैक जरूरत दुनूमे सँ किनको किए रहतैन। आइ ने दरभंगा जिला बँटि कऽ तीन जिला बनि गेल अछि मुदा ओइ समयमे जिला तीन सब्डिवीजनमे बँटल छल- दरभंगा-मधुबनी आ समस्तीपुर। दरभंगा जिलो आ सब्डिवीजनो छल। तँए समस्तियोपुर आ मधुबनियोक बासी कनिष्ट छलाहे।

कृष्णकान्त बजला-

“हमर घर हरिपुर अछि आ अहाँक?”

राधाकान्त-

“हमर सीतापुर।”

जखन सबहक बाबा एके छी माने जिला एक छी, तखन पित्ती आ बड़-भाय माने सब्डिवीजनक आ ब्लौक क मोजरे केते, तँए दुनूक बीच कोनो मन-मनान्तर किए उठितैन। ओहुना विद्यालयमे गाम-समाजक हिसाबसँ जातीय बन्धन थोड़ेक ढील अछिए। माने ई जे कथा-कुटुमैतीमे जइ हिसाबे जातिक जड़ि खुनि-खुनि जीऔल जाइ छै, तैठाम तँ ओ जगजगार हेबे करत किने। से विद्यालय, महाविद्यालयमे नहि अछि। ओइ हिसाबे बुझू माटिक तरमे झँपाइते जा रहल अछि। ओना,दुनूक चेहरो-मुहरामे तरपट नहियेँ छेलैन। दुनूक सामंजसक बाधाक बीच केतौ बाट खाली नइ छल। संजोग भेल, चाहे दोकानदार अपन बीस बर्खक कमाइसँ निच्चाँ ईंटा जोड़ि ऊपर सीमटीक चदरासँ छाड़ि हालेमे एकटा घर बनौलक जइमे दूटा कोठरी छइ। एकटामे अपन परिवार छै आ दोसर भाड़ा लगौत।

राधाकान्तो आ कृष्णकान्तो दरभंगा शहरक लेल अनाड़ी छलाहे। चाह हाथमे पकड़ैत राधाकान्त दोकानदारकेँ पुछलैन-

“विद्यार्थीक रहैबला डेरा भॉंजपर केतौ अछि? ओना, दुनू गोरेकेँ गामेसँ भॉंज लगि चुकल छेलैन जे चौबे लॉज छै, जइमे दू-चारि कोठरी सदिकाल खालीए रहैए। चौबेजी अपनो भरि दिन एकटा चटसारपर बैस गॉंजे पीबैत रहै छैथ तँए कोनो विद्यार्थीकेँ डेरा नइ भेटैक प्रश्न मनमे उठिते ने अछि।”

बगलक खाली कुरसीपर बैस दोकानदार अपन अन्तर-शक्ति जगबैत बाजल-

“दू गोरेक रहैबला एकटा कोठरी हमरो अछि।”

रहैक डेराक आशा सुनि दुनूक मन तिरपीत भेल। कृष्णकान्त दोकानदारकेँ पुछलैन-

“की भाड़ा लेबइ?”

एक तँ जेहने अनाड़ी दोकानदार तेहने अनाड़ी राधाकान्तो-कृष्णकान्त। ओना, जेहेन डेरा तेहेन भाड़ाक दर छेलैहे। मुदा कोनो नव, भाड़ा दइबला वा लइबलाक संग तँ विकल्प बनले अछि जे जइ तरहक घर अछि तइ तरहक भाड़ा भेल। जहिना चौबे लॉजक भाड़ा, दस रूपैआसँ बीस रूपैआक बीचक अछि, तेहने घर ने दोकानदारोक छैन। तैबीच दोकानदारक मन नचैतविद्या-अध्ययन केनिहारक रूप लग पहुँच गेल। एक ब्रह्मचारीक रूप देख दोकानदार ठाँहि-पठाँहि बाजल-

"बौआ, अहाँ सभ छोट भाइक रूपमे रहब, तैठाम हमर बाजब नीक हएत। अहाँ दुनू गोरे अपनामे विचारि लिअ, जे भाड़ा कहब, हम कोठरी दऽ देब।"

एक तँ दुनूक मनमे सी.एम.कौलेजमे प्रवेशक खुशी, तैपर चाहक खुशी सेहो छेलैन्हे। तँए माता-पिताक सोहे-बात मनमे किए रहितैन जे अपन ओकाइतिक हिसाबसँ काज करितैथ। ओना, दुनूक मनमे नव विचार सेहो अँकुरिये गेल छेलैन। ओ अँकुरल छेलैन दोकानदारक विचार देख, जखन बेचारे अपने सभपर फेक देलैन तखन बजारक जे हिसाब अछितइ हिसाबसँ ने बाजब।

पचीस रूपैआ भाड़ा तय-तसफिया करैत दोकानदार बाजल-

"कनिये दूरपर घर अछि, चलू चलि कऽ देखाइये देब आ तालाक कुञ्ञी सेहो दऽ देब।"

सोना-चानी दोकान-ले भिनसुरका चारि पाँच बजेक समय जहिना कुसमय भेल तहिना चाहक दोकानले दुपहरक समय भऽ जाइते अछि। माने स्पष्ट अछिए। एकर विपरीत दिशा सेहो अछिए। चाहक दोकान-ले चारि-पाँच बजे भोरक समय शुभ भेल आ सोना-चानीक दोकान-ले अशुभ, तहिना सोना-चानीक दोकान-ले दुपहरक समय शुभ भेल मुदा चाहक दोकानदार-ले अशुभ भेबे कएल। खाएर जे होइए हुअ दियौ अपना ताले दुनू बेताल अछि। समय शुभ-अशुभ होइते ने अछि,काज आ स्थान ओकरा शुभ-अशुभ बनबैत अछि।

कौलेजमे अखन पढ़ाइ शुरू होइमे आठ दिन बाँकी छल। तँए आठम दिनक दिन ठेक राधाकन्तो आ कृष्णकान्तो आ दोकानदार सेहो अपन-अपन काज दिस बढ़ला। संग हटला पछाइत जहिना एक दिस दोकानदारक मन अपन एक जिनगी चढ़ैत देखलक। माने ई जे दरभंगा सन बजारमे अपन दस धुर घराड़ी बनौलक तेकर खुशी, तैपर दोकानक आमदनीक संग घरक भाड़ा सेहो देखलक। मने मन दोकानदार अपन प्रज्वलित होइत भविस देखए लगल तहिना दोसर दिस राधाकान्तो आ कृष्णकान्तो अपना बले अपन काज सम्हारि कऽ ने घरमुहाँ भेला, तँए मनमे मस्ती उठब सोभाविके अछि। दुनू मस्तीसँ आगू बढ़ैत ओइ मोड़पर आबि अँटैक कऽ ठाढ़ भेला जैठामसँ दुनू बेकतीक अपन-अपन गाम दिसक रस्ता फुटैत अछि। मात्र दू घन्टाक बीचक दुनू सम्बन्ध जेना बहैत जिनगीक धारकेँ एकठाम जोड़ि देलक। एक धारमे जुटला पछाइत धारसँ पुन: अलग दोसर धार बनाएब जहिना असान अछि तहिना भारियो तँ अछिए। ओना, होइत दुनू अछि। एक पुरुष आ एक नारीक बीच सम्बन्ध भेने सृष्टिक शक्ति जखन आबि जाइए तखन जँ दू पुरुखक बीच सम्बन्ध बनत तँ ओ भलेँ सृष्टिकर्ता नहि बनए मुदा सिरजन कर्ता नइ बनि सकैए सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैत अछि। ओना, तैबीच दुनूक अपन-अपन परिवारो आ विद्यालयक विद्याध्ययनक विचार सेहो भइये गेल छेलैन जइसँ आमक कलमक गाछ जकाँ नमगर-चौड़गर देह-दैहिक मिलान सेहो भइये गेल छेलैन। एक तँ पैछला कथाक सम्बन्ध, तैपर दू घन्टाक टटका सम्बन्ध सेहो तहदर-तड़गर बनियेँ रहल छेलैन।

अन्तिम विदाइकेँ नव आवरण दैत कृष्णकान्त बजला-

“भाय, अखन तक हेराएल भैयारी छेलौं, मुदा आब तँ भेटल संगी भेलौं, संग मिलि चलबो अछि आ चलैत रहबो अछिए। तँए एकटा निसचित समय बना लिअ जे केते बजे दरभंगा पहुँच जाएब।”

राधाकान्त बजला-

“भाय, अहाँ इलाकामे जे होइत हुअए मुदा हमरा इलाकामे बेटा होइ कि बेटी, माता-पिता घरसँ बिनु खेने नइ निकलए दइ छैथ, तहूमे बुझिते छिऐ जे विदाइयक भोजन केहेन होइ छइ। तँएबारह बजेक बादे घरसँ निकैल हएत, तइ हिसाबे पहुँचब।”

राधाकान्तक बात जेना कृष्णकान्तकेँ छुबि देने होनि तहिना मन छुबाइन भऽ गेलैन। अपन इलाकाक ऊपर लागल कलंककेँ साफ करैत कृष्णकान्त बजला-

“भाय, एना जे हमरा इलाका आ अपना इलाकाक बेवहारक बात केलौं से की हमर घर मिथिलासँ बाहर अछि?”

सामंजस करैत राधाकान्त बजला-

“भाय, हमर-अहाँक एक बेवहार-विचार रहितो प्रकृति अवघात करिते अछि। की अपने ऐठाम एहनो इलाका नइ अछि जे धार-धुरमे कटि-छँटि कऽ तेनानष्ट भऽ गेल जैठाम बेटा-बेटीकेँ माता-पिता भूखले घरसँ विदा नइ करै छैथ।की एकरा नकारल जा सकैए?”

राधाकान्तक बातपर कृष्णकान्त अपन मुड़ी डोलबैत चुप्पे रहला। एक-दोसरक नजैर-मे-नजैर मिलबैत दुनू गोरे अपन-अपन गामक रस्ता पकैड़ विदा भेला।

एक डेरा आ एक कौलेजमे तीन साल समय बीतल। दुनू गोरे, राधाकान्तो आ कृष्णकान्तो एक संग एक घरमे चौबीसो घन्टाक किरिया-कर्म करैत बी.ए. ऑनर्सक किलासमे पहुँच चुकल छला। अर्थ शास्त्रक विद्यार्थी रहने दुनूकेँ अर्थ-चरित्रक आत्म-ज्ञान मनमे जागि ई स्पष्ट कऽदेने छेलैन जे अपन जे पैतृक सम्पैत अछि ओ जीवनक लेल परियाप्त अछि। तँए, नोकरीकेँ मनसँ हटा दुनू गोरे अध्ययन दिस अपनाकेँ लगौने रहला। दुनू गोरे अर्थशास्त्र-प्रतिष्ठाक डिग्री पाबि अपन पुस्तैनी किसानी जिनगी शुरू केलाह।

पतिक विचार माने पुरान मित्र एला अछि सुनि श्यामा अगदिगमे पड़ि गेली। अगदिग ई जे अभ्यागतक माने तँ दोस-महीमसँ लऽ कऽ सर-सम्बन्धी होइत अनठियोक संग अछिये, मुदा पहिने जे स्वागतक ढंग छल ओइमे थोड़ेक तोड़-जोड़ सेहो भेबे कएल अछि। पहिने एक लोटा जल अभ्यागतकेँ पएर धोइले देल जाइ छल मुदा आजुक परिवेशमे ओ गौण भऽ गेल। तेकर अनेको कारण अछि...। मुदा लगले श्यामा अपन पतिक नाड़ पकैड़ मित्रक नाड़ी पकैड़ लेली। लोटामे जल आ गिलास नेने श्यामा दरबज्जापर पहुँचली। ओना, श्यामा सहैम-सरमा कऽ एकाएक धकचुका गेली। धकचुकाइक कारण भेलैन जे झुर्डीक आगमन भेने राधाकान्तक चेहरा झुड़िया गेल छेलैन जइसँ वयसगर रंग-रूप पकैड़ नेने छेलैन। मुदा अपन घर अपन होइए किने। जेकर मान-सम्मानक भार घरवारीक ऊपरमे अछिए। पत्नीक धकचुकीकेँ मठियबैत कृष्णकान्त बजला-

“एना धक-चुकाइ किए छी।मित्रतामे छोट-पैघ नइ होइ छइ। सबहक सम्बन्ध मित्रवत होइ छै, माने बराबरीक सम्बन्ध। जहिना अहाँ मित्रणी-मैत्रेयी भेलिऐन तहिना ओहो ने मित्रणा भेला।”

ओना, किसान परिवारसँ जुड़ल श्यामा, मुदा अपनाकेँ पतिक आगूमे पतिक पूरक रूपमे बुझै छेली, तँए मुँह दाबि बाजबसोभाविके छल। लोटाक जल आ गिलास रखि श्यामा चाह आनए आँगन गेली। पुतोहु चाह बना नेने छेलैन। पियासक तृष्णा सेहो कनी-मनी राधाकन्तकेँ जगिये चुकल छेलैन। पानि पीबिते रहैथ कि श्यामा चाह नेने पहुँच गेली। यएह ने भेल अतिथि-सत्कार जे खान-पानक संग गप-सप्पमे मन बहलबैत बहेलिया बनल रही।

टेबुलपर चाहक कप रखि श्यामा आँगन दिस विदा हुअ लगली।मुदा कृष्णकान्त रोकैत बजला-

“मित्र की कोनो हमरेटा छिआ जे अहाँ छोड़ि कऽ आँगन जाइ छी। जहिना ओ अहाँक मित्रणा छैथ तहिना अहूँ ने मित्रणी छिऐन!”

खग जानए खगक बोल, पतिक विचार सुनि मुस्कुराइत श्यामा आगूमे बैसली। टेबुलक एक भागमे राधाकान्त दोसर भाग कृष्णकान्त आ तेसर भाग श्यामा छेली। जहिना दू पुरुखक बीच एक नारीकेँ रहने पुरुष परीक्षा होइए, माने जहिना दुनू भाँइक बीच सीताकेँ रहने रामक परीक्षा भेलैन तहिना ने लक्ष्मणोक भेबे केलैन। से खाली पुरुषेक परीक्षाटा होइएएहेन बात नहि अछि, नारियोक संग अछिए। ओ अछि दू नारीक बीच एकटा पुरुखक हएब। हँ! एकरा अहाँ सौतीनक डाह नइ बुझब।

जेना थाकल-ठेहियाएल राधाकान्त पानि पीलैन तेना चाह कण्ठसँ निच्चाँ नइ ससैर रहल छेलैन। जइसँ रूकि-रूकि चाह पीबै छला। श्यामा बीचमे ओहिना सकदम छेली जेना कियो ओहन स्थानपर पहुँचला पछाइत सभ किछु हेराएल-हेराएल देख सकदम भेल रहैए।श्यामाक मनमे उठैत रहैन जे पतिक संग मित्रक केहेन बेवहार रहल छैन। बिनु ओइ बेवहारकेँ बुझने-जनने कोनो एहेन बेवहार ने भऽ जाए जे ओइसँ विपरीत होइ वा हटल-हटल होइ। ओना, एहनो तँ मानले जाइए जे मूर्खक उच्चकोटिक ज्ञानपन वएह भेल जे चुपचाप सुनि-सुनि मनमे घोड़ैत रहल। श्यामा तँए चुप, मुदा राधाकान्तकेँ सेहो चुपचाप सकदम देख कृष्णकान्त बजला-

“मित्र, चाहमे किछु कमी अछि जे पीबैमे बाधा उपस्थिति होइए।”

बच्चासँ सीखल-जाँचल राधाकान्त छलाहे, मित्रक नस-नस ओहिना जनिते छला जहिना नर्कक मंत्र घाट होइत अछि। बजला-

“मित्र!मित्रणीक चाहपवित्र छैन मुदा अपने चाह अपवित्र भऽ गेल अछि।”

राधाकान्तक बात सुनि श्यामाक मन सेहो बजैले लुसफुसेलैन। लुसफुसाइक कारण भेलैन जे राधाकान्त मित्रणीक चर्च कऽ देने छेलखिन। ओना, श्यामाक मनमे गाड़ी रोकैक ब्रेक जकाँ आगू-पाछू सेहो दुनू ब्रेक लागले छेलैन। मुदा ओ तँ सलाइ रिंच जकाँ बहुरूपिया अछि, जइसँ ई निर्धारित करब थोड़ेक कठिनाह तँ अछिए जे कोन नट केतेपर रिंचसँ कसाएत। श्यामाक मनमे ब्रेक ई लगलैन जे परिवारक मालिक तँ पुरुख भेला, घरक सभ छार-भार हुनका ऊपर भेलैन। हम तँ साधारण चाह अननिहारि छेलौं। पीनिहार सभ छी, बनौनिहार एक भेली माने पुतोहु बनौली, तैबीच मित्रक एहेन बोल किए भेलैन? एहनो तँ संभव अछिए जे जहिना दूधक फूलक जे सुगन्ध अछि ओ ओकरे (माने दूधेक) लोहियासँ सटल-जरल दूधक नहियेँ अछि। भले ओ दूधेक किए ने होइ। ओ तँ जरल डारहीक जराइन महक निकालबे करत। सएह तँ ने मित्रोकेँ भेल छैन।

काग-भुशुण्डी जकाँ रस्ता परहक बर्खाक पानिमे नहा पाँखि फड़फड़ा कऽ झाड़ि शान्त-चित्तसँ श्यामा अपन मुँह बन्न केने रहली।

एमहर मित्रक विचार सुनि कृष्णकान्त स्तब्ध भऽ गेल छला। जे एहेन विचार मित्रक मुहसँ किए निकलल। ओना, मनमे ब्रेक जकाँ ईहो लागि गेल रहैन जे मित्रक मन जरूर बेथासँ बेथित छैन। A Friend is a need friend in deed. केहेन बेथा? केना पुछबैन बेथाक बेहाल?मुदा बिनु बुझने कियो केकरो बेहालकेँ सुहालो तँ नहियेँ बना सकैए। सभ समस्याक अपन-अपन सीमो छै आ श्रेणियो छइहे। ओही सीमा-श्रेणीक बीच ने समाधानो अछि। ई तँ नहि ने, जेना कृष्ण-सुदामाक बीच भेलैन। दोस्तिनीक जे सिनेही सनेस कृष्ण हँसि-हँसि खाए चाहै छला से सुदामा अढ़ दाबि-दाबिनुकबए चाहै छला। भलेँ कृष्ण चित्तचोर छला बुझि तँए गेला, मुदा सुदामाकेँ अपन गरीबीक प्रति ग्लानि नइ होइत रहैन सेहो केना नहि कहल जाएत...। कृष्णकान्तक मन भीतरे-भीतर तिरछियाइत ओतै पहुँच गेलैन जेतए पियासलकेँ पानिक तृष्णा तेज रूपमे जगैए।ओना, जहिना पियासल गाए-मालक तीन रूप सामने अबैए। पहिल- जोर-जोरसँ डिरियाएब, दोसर- हूकरब आ तेसर- अपन पियासकेँ आँखिसँ निकालि मलकारक आँखि चढ़ि-चढ़ि करूण क्रन्दन करब। यएह स्थिति कृष्णकान्तक बनि गेलैन। जे राधाकान्त बुझि गेला। बुझि ई गेला जे एक तँ हम सभ उमेरगर भेलौं, अनेको रंगक दुख-दर्द सहल देह अछि, तैठाम अशुभ बात मुहसँ निकालैमे कृष्णकान्तकेँ असोकर्ज तँ भइये रहलैन अछि। दुखाएल मने मुस्कुराइत राधाकान्त बजला-

“मित्र, अहाँक गाममे लक्ष्मी साक्षात् नाचि रहली अछि। मुदा हमर...।”

बीच रस्तामे राधाकान्तक विचारक गाड़ीकेँ रूकिते देख पाछूसँ ठेलैत कृष्णकान्त बजला-

“से की?”

राधाकान्त बजला-

“कौलेज छोड़ला पछाइत अपन पैतृक सम्पैतिक काज- खेती-बाड़ीमे तेना बोहिया गेलौं जे बीचक तीस साल केना बीत गेल से बुझबे ने केलौं। जहिना वेरागी सभ राम-रमैया, कृष्ण-कन्हैयाक सतसंगक पाछू बोहिया जाइ छैथ तहिना भेल। अहूँकेँ बिसैर गेलौं आ अहाँक संग मित्रणियोकेँ बिसैर गेलिऐन।मन अछि किने जे लोकनिया हमहीं गेल रही। ओही गामक लोक ने हमरा ‘लोकना-लोकना’ कहए लगल।”

राधाकान्तक विचार सुनि श्यामा अखियास करए लगली। हिनकर बचपनाक देह केहेन लालबुन्द छेलैन आ आइ झुर्डी पड़ि रहल छैन! जरूर केतौ-ने-केतौ जिनगीमे खाँच-खरोच भेलैन अछि। नहि तँ एहनो होइ जे जे आम सुभर निरोग छल ओ कोलिपदु भऽ जाएत! एकर माने ई नइ बुझबै जे जेतबो सत् बात छोट बेदरा बजैछल, तेतबो सत् बात आइ बाप-पित्तीक कोन बात जे बाबो नहि बाजि पबै छैथ। किए ने बाजि पबै छैथ से तँ अपनो मन कहिते हेतैन...।

बेर-बेर श्यामा आँखि उठा-उठा राधाकान्तक शरीरपर नचबए लगली।

ओना, कृष्णकान्तक मनमे ईहो उठए लगलैन जे खेला-पीला पछाइत जिनगीक नीक-बेजा एक बात करब नीक हएत। मुदा लगले मन ईहो कहए लगलैन जे दुखक जड़ि जेते जल्दी मेट जाए ओते शुभ...।

कृष्णकान्त बजला-

“मित्र, तीस साल पैछला जिनगी नीक रहलजे एक पीढ़ीक जीवन भेल, बढ़ियाँ बात। मुदा पछातिक दस बर्ख?”

हारल सिपाही जकाँ नहि, बाधासँ बाधित सिपाही जकाँ राधाकान्त बजला-

“मित्र दस बर्खसँ जंगली गाइयक (नील गाए) उपद्रव गाममे तेते बढ़ि गेल अछिजे बाड़ी तकमे तीमन-तरकारीक उपज नइ भऽ पबैए। जहिना हाथ रहैत निहत्था बनि गेल छी तहिना बुधि रहैत बुधिहीन सेहो बनि गेल छी। शुरूक तीन साल मनमे यएह होइत रहल जे जहिना बोन-झाड़ दिससँ नील गाए वौउरा कऽ गाम दिस आबि गेल अछि तहिना चलियो जाएत।”

कृष्णकान्त बजला-

“तइमे की बाधा भेल?”

“की कहब!सबे नचाबे राम गोसाँइ। एक दिस जहिना गंगा प्रदूषित धार दुनियाँमे घोषित अछि, तहिना दोसर दिस वैतरणी पार करैवाली पवित्र धार कि नइ छैथ सेहो तँ वएह छैथ। जेते मनुखक लहास गंगा धारमे अर्पित-समर्पित होइए, तेते कोन धार पचा सकैए।गाइयक रूपमे जंगली जानवरक उपद्रव तेते बढि गेल जे जीब कठिन भऽ गेल अछि।”

कृष्णकान्त बजला-

“पहिने नील गाएकेँ सील-मोहर करए पड़त जे एकरा केहेन पशु मानल जाए।”

अन्तिम खुशी जाहिर करैत राधाकान्त बजला-

“मित्र, आब जिनगीए केतेक शेष अछि। एते दिन काजपर बैसल छेलौं, काजमे समय नचैत छल, मुदाआब ओ सभ सभटा चलि गेलतँए आब थोड़ेक फ्री सेहो भइये गेलौं, भेँट-घाँट होइत रहत।”

कृष्णकान्त-

“मित्र, पाँच दिन रहू। अपन हाथक उपजौल एक-एक चीज-वौस खुआ देब। पाँच दिनक पछाइत जाएब।”

राधाकान्त बजला-

“मित्र, अपन जिनगी ओहने बना नेने छी जेहेन समय-साल बनि गेल अछि। भनेचालीस बर्खक बीचक भेँट-घाँट जे गैप छल ओ समतल बनि जाएत। आइ भरि छी, काल्हि भोरे चलि जाएब।

q

शब्द संख्या : 2595, तिथि : 4अप्रैल2018

१.२

जगदीश प्रसाद मण्डल

पंगु

उपन्यासक आरम्भ

2.

14 जनवरी 1934 इस्वीक दिनक एक बजेमे जबरदस भुमकम भेल। अखुनका जकाँ भुमकमक नाप-जोख करैबला कोनो यंत्रक अविष्कार नहियेँ भेल छल जइसँ लोक बुझैत जे केहेन भुमकम भेल, मुदा एते तँ भेबे कएल जे बड़का-बड़का गाछो सभ खसल, भीतघर सेहो खसल आ खेत-पथारमे दारारि फटि-फटि जमीनक भीतरसँ बाउल ऊपर आबि-आबि बाधक-बाध जमीनमे पसरबो कएल। पानिक मोकर सभ सेहो फुटल। गाम-गामक शकल बदैल गेल। घर खसने लोको मरल।

आने गाम जकाँ क्षति सीतापुरमे सेहो भेल। ओना, सीतापुरमे एकोटा घर पजेबाक तँ नहियेँ छलखालीपान-सात परिवारकेँ कँचका पजेबाक घर छेलै, ओहो सभ खसल। सीतापुरमे अधिकांश घर टटघर छल जे लकड़ी-बाँसक खुट्टापर ठाढ़ छल, ओ हिल-डोलि जरूर गेल मुदा खसल नहि। ओना, सीतापुरमे लोअर प्राइमरी स्कूल सेहो छेलै मुदा सरकारी नहि, एकटा शिक्षक स्कूल चलबै छला। बीस-पच्चीसटा विद्यार्थी छल। सभ विद्यार्थी शनियेँ-शनि हुनका सनिचराक रूपमे पाभैर चाउर आ एक-एकटा पाइ सभ दैत रहैन। एक गोरे ऐठाम शिक्षक रहै छला जे खाइयो-पीबैले दइ छेलैन आ बदलामे परिवारक बच्चा सभकेँ दरबज्जेपर पढ़बैत रहथिन।गौँआँक सहयोगसँ पनरह हाथ नमती भीतघरक रूपमे स्कूल छल। भुमकममे ओहो खसि पड़ल। स्कूल खसला पछाइत बहरबैयाक[1] कचहरी[2]मे पढ़ाइ हुअ लगल। तीन-चारि सालक पछाइत स्कूलक जगह बदैल, माने जैठाम स्कूल छल ओइ जगहसँ हटि दोसरठाम एकटा परतीपर गौँएक सहयोगसँ पुन: भीतघर बनल। स्कूलक जगह बदलैक कारण भेल जे ओइ जगहकेँ लोक अशुभ मानलक।

अंगरेजक विरोधमे एहेन माहौल बनि गेल छल जे स्कूलक जे शिक्षक छला, ओहो चोरा-नुका कऽ लोक सभकेँ देशक अजादीक विषयमे बुझबै छला। गाम-गाममे अंगरेजी शासनक समर्थक सेहो छेलाहे। वएह सभ चुगली करि देलकैन जइसँ 1942 इस्वीमे शिक्षक पकड़ा गेला। स्कूल बन्न भऽ गेल। ओना, साल भरिक पछाइत जहलसँ शिक्षक निकललामुदा घुरि कऽ सीतापुर नहि एला। स्कूलक भीतघर ओहिना ठाढ़ भेल रहल। तीन सालक पछाइत दोसर शिक्षक एला। हरिचरणक नाओं सेहो पिता[3] स्कूलमे लिखा देलखिन।

देश स्वतंत्र भेल, मुदा अखन तक आमजन स्वतंत्र शब्दक अर्थ बुझबे ने करै छला। सीतापुर गाममे बेसी-बेसी जमीनबला सेहो छला मुदा मालगुजारी असुलनिहार जमीन्दार मालिक नइ छला। जइसँ पाहीपट्टीक मालिक अपन पटवारी, गुमस्ता आ बराहिलक माध्यमसँ कचहरियो चलबै छला आ मालगुजारी सेहो असुलै छला। कचहरी चलबैक माने भेल, गाममे जे झगड़ा होइ, तेकर पनचैती करब। ओना, तइ मानेमे जमीन्दार कमजोर छला। तँए गामक मुँहगर सभकेँ सेहो पनचैतीमे बजबै छला। कचहरीक कारोबारीकेँ कमजोर होइक कारण छल जे दू परिवार वा तीन परिवारक बीच जे झगड़ा होइ छल ओइमे जे मारि-पीट होइ छल,ओ टटका रहै छलतँए कनियाँ अनुचित भेने पार्टी मानबे ने करैत रहए। माने पनचैती स्वीकार नइ करैत छल। जइसँ कचहरीक आदेश टुटि जाइ छल।

देश की स्वतंत्र भेल की नइ भेल, से बुझनिहारक अभाव तँ रहबे करइ। मुदा रंग-रंगक भाषणो गाममे चलिते छल जइसँ किछु हेराएल-भोथियाएल मुद्दा सभ सेहो जगिते छल। जमीन्दारी टुटि गेल, जमीन्दारक

शासन सेहो टुटि गेल। आब मालगुजारी सरकार असुलत आ ओइ पाइक खर्च समाजक काजमे लागत इत्यादि...।

अखन तक गाममे ने एकोटा नीक सड़क छल, ने एकोटा पुल, आ ने स्कूल बनल। आम जनक नजैरमे सेहो नव-नव विचार जगबे कएल। पुलक नाओंपर दसटा ईटा रस्ता परहक कोनो-कोनो खाधिमे बिछा देल जाइत रहै, जैपर होइत लोक बरसातमे चलैत छल।

आम-कटहरक खुदरा गाछो आ गाछीमे सेहो जमीन्दारक ऐमला-फेमलाक संग लड़ाइ उठल। ओना, अखन धरिक[4] जे कचहरीक रूतबा छेलै ओ वौद्धिक रूपमे कमल मुदा बेवहारिक रूपमे ओहिना छल माने पूर्वते। माने ई जे देश स्वतंत्र भेला पछातियो गारि पढ़ब, मारबइत्यादि कचहरीक ऐमला-फेमलाक बेवहार रहबे कएल। आमक गाछीक लड़ाइ गाछक तड़ी-फड़ीक लेल भेल। तँए एकराआन गाममे जे कहल जाइत होइ मुदा सीतापुरमे 'आमक गाछीक लड़ाइ' कहल जाइत अछि। से केबल आमक गाछीक लड़ाइये कहल जाइए से बात नइ अछि। आमक गाछीकेँ बिआहोक सभा-गाछी आ दोस्तियारीक धरम-गाछी सेहो कहले जाइए।

आमक गाछीक लड़ाइ कचहरीक पटवारी-गुमस्ता-बराहिलक संग गुलाबचनकेँ भेल। गुलाबचनकेँ तीन भाँइक भैयारी, तीनू भाँइ कातिक-सँ-फागुन धरि अपने गाछीमे अखड़ाहा खुनि कुश्ती लड़ैत छल। गुलाबचनक पिता गोपीचनकेँ अपन बुद्धि-अकिल छेलैन तँए अपन सोच-विचार सेहो छेलैन्हे। तेकर एकटा कारण ईहो छल जे दस कट्ठा खेतकेँ गोपीचन चारू बापूत मीलि कोदारीए-सँ उनटा लइ छला, माने तामि लइ छला। तैसंग अपन चारिटा महींस सेहो पोसने रहैथ, जेकर दूध-दही खाइते छला। तँए जिनगीमे ऐसँ बेसी आरो चाही की? कोनो कि गोपीचन शास्त्र-पुराण पढ़ने छला जे मनुखक देहपर हाथीक माथा आ बिनु घटकैतिये राम-सीताक जोड़ी नगर बधू केना धनूष टुटैसँ पहिने लगा लेलैन, ऐ सभपर विचार करितैथ। ई तँ छी शास्त्र-पुरानक विचार। अपन विचार शास्त्र-पुरानमे रहअ। ऐसँ गोपीचन आ गोपीचनक तीनू बेटाकेँ कोन मतलब? मतलब छै अपन मेहनतक संग बापक देल सम्पैतकेँ सुरक्षित राखबसँ।

पैछला साल गोपीचन मरि गेला। गोपीचन जा जीबै छला ता मालिककेँ अपन जमीनमे अपन रोपल आम-कटहरक फड़ अपना हाथे बाँटि-बाँटि दइ छेलखिन। बेटा सभ एतबे करै छेलैन जे गाछक आधा-छिधा आमो आ कटहरो तोड़ि आगूमे आनि राखि दइ छेलैन आ महींस चरबए चलि जाइ छल। जइसँ मालिकक संग बँटबाराक महिरम बुझबे ने केने छल।

आम-कटहर तोड़बए कचहरीक बराहिल पहुँचल। गुलाबचनकेँ एतबे अनुमान छेलै जे अपन गाछी-कलम छी। आन गामक लोक सभ कचहरीमे रहैए, ओकरो खेनाइ-पीनाइ तँ गौंए ने देत। तँए पाँचटा दसटा आम हमहूँ देबइ।

तीनू भाँइ गुलाबचन मड़ुआ रोपि कऽ आएले छल। दुपहरक समय रहै, बराहिल आबि गुलाबचनकेँ आम तोड़ए कहलखिन। तैपर गुलाबचन बाजल-

"अखन मड़ुआ रोपि कऽ तीनू भाँइ एबे केलौं हेन, निचेनसँ गाछीक आम तोड़ब। पछाइत पाँचटा आम अहूँकेँ कचहरीमे पहुँचा देब।"

अखन धरि थाना-पुलिस जकाँ बराहिलो अपनाकेँ बुझिते छल। पटवारीक नाओं कहैत बाजल-

"सरकारक हुकुम छह, आम आइये तोड़बह।"

तहीकाल गुलाबचनक मझिला भाए- बालचन पहुँचल। तीनू भाँइमे बालचन सभसँ बूफगर। जेहने छिपगर जबान तेहने हाथो-पएर। बराहिलक मुँहक बात'सरकारक हुकुम छह' सुनिते बालचनकेँ देहमे देशी सरकार बनैक विचार जगि गेल। जगैक कारण ईहो रहै जे काल्हिये साँझमे सोराजीलालक मुहसँ सुनने छल जे देश-स्वतंत्र भेल, सबहक देश भेल तँए केकरो कियो मालिक नहि रहल। सबहक देश भेल, सबहक शासन भेल। बराहिलकेँ बालचन कहलक-

"हम अपना चीजक अपने मालिक छीकी तोहर सरकार छह। जा, नइ देबह एकोटा आम।"

बालचनक बात सुनि बराहिल ठमकल, मुदा जहिना शासनक कुर्सीपर बैसल अफसर वा थानाक वर्दी पहिर एको लीबरक आदमीकेँ ढोड़ साँपक फुफकार होइत अछि तहिना बराहिलक सेहो भेल। तैबीच गुलाबचन अपन भाएकेँ चुप करैत कहलक-

"बालचन, दरबज्जापर आएल दुश्मनोकेँ लोक नीके बोल कहै छै, तूँ किए अनेरे झगड़ा बेसाहै छँह।"

ने गुलाबचने अपन विचारक भावार्थ बुझलक आ ने बालचने बुझलक मुदा बराहिल बुझि गेल। बुझबो केना ने करैत, जिनगी तँ बीतै छेलै शासकीय भाषा-शास्त्रीक बीच ने...। जँ गुलाबचनकेँ एतबो होश रहितै जे दरबज्जापर आबि बराहिल आँखि देखबैए आ हम ओकरा अभ्यागत बुझै छिऐ! जँ से बुझैक शक्ति रहितै तखन जेठ भाइक भाषा नै बजैत। ओना, बराहिल बालचनक धुआ-काया देख सहैम गेल छल, मुदा जमीन्दारीक मंत्र जे मनकेँ पकैड़ नेने छेलै, तइसँ फुफकार रहबे करइ। गुलाबचनक दरबज्जापर सँ बराहिल कचहरी दिस विदा होइत बाजल-

"आइ तोरा सभ भाँइकेँ देखा दइ छियौ।तीनू भाँइकेँ हथकड़ी लगा जेल जखन पठेबौ तखन अपने बुझि जेबही!"

बराहिल चलि गेल। गुलाबचन सेहो नहाइ-खाइ दिस बढ़ल।

कचहरी पहुँच बराहिल पटवारीकेँ सभ बात सुना देलकैन। ढहैत सामंती सोच आ उठैत जनवादी विचारक बीच पटवारीक मनमे द्वन्द्व पसैर गेल। मुदा समाजिको सत्ता तँ सत्ता छीहे, ओहूमे केतेको भत्ता अछिए। समाजोमे तँ एहेन लोकक विचारक सत्ता रहले अछि जे राज-काजसँ या तँ जुड़ल रहल अछि वा ओइमे सटल रहने अपन सत्ता बनौने रहल अछि। स्कूली शिक्षा तँ पटवारीकेँ कम्मे रहैन मुदा जमीन्दारी सूत्रक नीक अनुभव रहबे करैन। बराहिलकेँ राजक हथियार बना लड़ाइयक सूमा बनौलैन। गाममे जेतेक मुँहगर-कन्हगर लोक छल, जेना- मैनजन, देबान इत्यादिजेसभ कचहरीसँ जुड़ल रहए सबहक बैसार पटवारी केलक। अपनो गुमस्ता, बराहिलक संग गामक असेसर[5]केँ बजा एकठाम केलक। सर्वसम्मैतसँ काल्हि आम तोड़ैक निर्णय भेल। समयक हिसाबसँ सभ गुलाबचनक गाछी पहुँच बलजोरी आम तोड़ब शुरू केलक।

गुलाबचनकेँ बुकौर लगि गेल। मुदा बालचनक हिम्मतमे मिसियो भरि कमी नइ आएल। बालचनक हिम्मत देख गुलाबचन बाजल-

"बौआ!धन, धरम दुनू जेतह। आम तोड़ै छै ते तोड़ए दहक। छोड़ि दहक। भगवानकेँ दइक हेतैन ते ऐगला साल अहू बेरक साती आम दए देथुन।"

जहिना गर्म आगिमे पानि ढारने मिझा तँ जरूर जाइए मुदा ओकर परितापकेँ ठण्ढा होइमे किछु समय लगिते अछि तहिना बालचनक मनमे ईहो उठैत रहै कचहरीक झगड़ा गाममे पसैर जाएत। हेबो केना ने करितै गौंओ तँ संग छेलैहे। तेतबे नहि, वेचारा ने कहियो स्कूले देखने आ ने तेहेन पुरुखक सतसंगे भेल छेलै जइसँ पुरुखपनाक बोध होइतै। मुदा एकटा विचार बालचनक मनमे जरूर जगलै जे जखन गौंआँ सभ हँसेड़ीक रूपमे कचहरीक संग हमर सम्पैत लूटए आएल अछितखन ओकरा संग हमर समाजिक सम्बन्ध केहेन हएत? की हम ओइ समाजसँ ई नहि पुछि सकै छी जे समाज जखन विचारसँ चलैए तखन हँसेड़ी बनबैक की प्रयोजन भेल? जरूर किछु-ने-किछु भीतरमे रहस्य अछि...।

संजोग बनल। जखन गुलाबचनक गाछीमे आम टुटब शुरू भेल, तखने जेठुआ बिहाड़ि जकाँ भरि गाममे बिर्ड़ो उठल। एकाएक नवतुरिया सभ सेहो गुलाबचन-ऐठाम पहुँचए लगल। गामक नवका पीढ़ी जे अखड़ाहापर खेलाइ छलओ सभ बालचनकेँ गुरु कहै छेलैन। सोराजीलाल सेहो गुलाबचनक ऐठाम एला। अबिते सोराजीलाल सबहक बीचमे गुलाबचनकेँ कहलखिन-

“गुलाबचन, अहाँ संग अन्याय होइए, एकरा रोकू।”

सोराजीलालक विचारक प्रभाव जेते बालचनपर पड़ल तेते गुलाबचनपर नइ पड़ल। पड़बो केना करैत, जेकर विचार पहिनहि हारि मानि चुकल छलओ केना लगले उठि कऽ ठाढ़ होएत। घरसँ कडुतेल पिऔलहा लाठी निकालि बालचन बाजल-

“भैया, तूँ घरेपर रहह। घर-दुआरक संग स्त्रीगणो आ बालो-बच्चाकेँ देखैत रहिहह। हम छोटका भैयाक संग जा कऽ आम तोड़बकेँ रोकबै।”

जहिना देशक ओइ सिमानपर जे शक्तिशाली देशक सीमा सेहो छी, जाइत सिपाहीकेँ परिवारक लोक अन्तिम विदाइ बुझैएतहिना गुलाबचनक मनमे उठए लगल। एक दिस समांगक जिनगी देख रहल छलआ दोसर दिस सम्पैत। रंग-बिरंगक विचार गुलाबचनक मनमे चकभौर लिअ लगल। जिनगी-ले सम्पैत अछि वा सम्पैत-ले जिनगी? मुदा अखन सोचै-विचारैक लेल ओते समयो नहियेँ अछि जे आनो-आनसँ बुझि विचारब। तहूमे जखन लड़ाइयक मोर्चा बनि रहल अछितखन सभसँ बुझबो-विचारब केतेक नीक हएत? लड़ाइक मोर्चाक विचारक अनुभवो सभकेँ एक्केरंग नहियेँ होइ छइ। जे लड़ाइयक मोर्चापर उतरनिहार अछि वा जे मोर्चापर कहियो गेबे ने कएल, दुनूक विचारोमे भिन्नता हेबे करत किने..!

सोचैत-विचारैत गुलाबचन अपन दुनू भाँइकेँ माने ज्ञानचनो आ बालचनोकेँकहलक-

“बौआ, आम अपन परिवारक तोड़ि रहल अछि, मुदा जखनसमाजो पीठपोहु छैथतखन पाछुओ हटब नीक नहि। तँए पहिने दरबज्जापर आएल सहयोगी सभकेँ पुछि लहुन जे आगू की करब।”

गुलाबचनक विचार सुनि जहिना दुनू भाँइ ज्ञानचन आ बालचन ठमकल तहिना समाजक नवतुरिया सभ सेहो ठमकल। मुदा सोराजीलाल, जे दर्जनो बेर जेल-यात्राक करैत गुलाम देशसँ मुक्ति पाबि चुकल छैथ, हुनका विचारमे मुक्तिक ओ रूप ओहिना झलैक रहल छेलैन जेना पौने छला। अगुआइ करैत सोराजीलाल बजला-

“गुलाबचन, जिनगीक बाटमे केहनो आफद-असमानी वा केहनो रोड़ा-पाथर किए ने आबि कऽ रोकए मुदा पाछू नइ हटी। किएक तँ ओ निर्णायक दौर होइत अछि। ओइठाम पाछू हटने लोक पछुआ जाइत अछि। ओना, तइमे थोड़ेकहोशियारीक खगता जरूर अछि मुदा पाछू हटब किन्नहु नीक नहि।”

सोराजीलालक विचारमे गुलाबचनकेँ की भेटल से तँ गुलाबचने जानत, मुदा बिच्चेमे बालचन बाजल-

“सोराजी भैया, अहाँक विचार जँ संग रहत तँ सम्पैत बँचबैले हम अपन जानकेँ अराधि लेब। अहाँ जे कहबहमतइ हिसाबसँ करैले तैयार छी।”

बालचनक विचार सुनि सोराजीलाल बजला-

“बालचन, लड़ाइक मोर्चाक एक-एक क्षण ओ क्षण छी जे क्षणमे छनाक कऽ सकैए। तँए एको क्षण गमौने बिना चलह आम तोड़बकेँ रोकैले।”

सोराजीलालक विचार सुनि बालचनक मनमे लहरैत आगि जकाँ एकेबेर धधरा उठल। अपन लाठी सम्हारि बालचन गाछी दिस आगूए-आगू दौड़ल। पाछू-पाछू समाजक नवतुरियो, सोराजियोलाल आ परिवारक बाल-बच्चा सहित जनिजातियो सभ गरियबैत विदा भेल।

आमक गाछीमे गुमस्ता, पटवारी, बराहिलक संग असेसरो आ समाजक पाँचटा मुँहगर-कन्हगर लोक सेहो छला। गामक हँसेड़ीकेँ दौड़ैत अबैत सभ कियो देखलैन। एक्के-दुइये गुमस्तो, पटबारियो, बराहिलो आ असेसरो आमक गाछीसँ भागल। मुदा गामक जे पाँचो गोरे छला ओ पूर्ववते गाछीमे रहला। ओना, हुनका सबहक मनमे मारिक डर नइ पैसल रहैन। डर नइ पैइसैक कारण हुनका सबहक मनमे रहैन जे हम तँ समाजक लोक भेलौं किने, बीच-बचाउ करैत रहब। मुदा ई विचार मनमे जगबे ने केलैन जे जे बात अखन मनमे उठि रहल अछिओ तँ आम तोड़ैसँ पहिनौं उठि सकै छल। जँ से उठल रहैत तँ एहेन परिस्थितीए किए बनैत?

जमीन्दारक ऐमला-फमिलाकेँ भागैत देख सोराजीलालक मन अड़हुलक फूल जकाँ फुला गेलैन। गाछी पहुँच टुटल आमक ढेरीकेँ देखबैत सोराजीलाल बजला-

“गुलाबचन, अहाँक आम छी लऽ जाउ।”

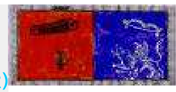
तही बीच सिंहेश्वर माने गामेक एक जातिक मैनजन,बाजल-

“गुलाबचन, अनेरे ने लाठी-लठौबैल करए चाहै छी। समझौता मानि लिअ।”

सिंहेश्वरक विचार सुनि गुलाबचन थकथकाएल मुदा सोराजीलाल बालचनकेँ कहलखिन-

“बालचन!समाजक यएह लुच्चा-लम्पट सभ गरीबक सम्पैत्तियो आ इज्जतो-आबरूकेँ सभ दिनसँ लूटैत आएल अछि। अखन ई समाज नहि राजक हँसेड़ी छी,तँए जे भागल से अपन जान बँचौलक, मुदा जे पकड़ा गेल तेकरा छोड़ब उचित नहियेँ हएत।”

सोराजीलालक विचार बालचन मानि लेलक। मुदा विचारमे कनी संशोधन जरूर केलक। संशोधन ई केलक जे कड़ुतेल पिऔल लाठी अछि, तँए ओइ लाठीसँ अवघात बेसी हएत। अवघात ई जे जहिना लोहाक तीर बनबैकाल करूतेल पिऔलासँ ओ विषाक्त भऽ जाइएतहिना बाँसक लाठियोमे होइए। जइसँ साधारण लाठीक अपेक्षा ओइसँ बेसी अवघात भऽ सकैए। लाठी रखि बालचन सिंहेश्वरक दुनू गालमे दू चाट मारलक।



सिंहेश्वरकेँ गालमे चाट लगिते जेतेक नवतुरिया छल, भुआ जकाँ बाँकी चारूपर लटैक हाँइ-हाँइ सभकेँ चोटियाबए लगल। दुनू हाथ उठा सोराजीलाल सभकेँ शान्त केलैन। मुदा एक दिस जहिना मारिक चोटसँ चोटाएल गहुमन साँप जकाँ पाँचो फुफकार काटि रहल छल तहिना दोसर दिस गनगुआरि-साँप जकाँ समाजोक सिपाही सभ सीटी बजाइये रहल छल। लड़ाइ जीतला पछाइत लड़ाइ लड़निहारक विचार सर्वोपरि भइये जाइए। सर्व-सम्मैतसँ निर्णय भेल जँ पाँचो गोरे साए-साए बेर कान पकैड़ समाजक बीच उठए-बैसएतँजान छोड़ि देबइ।

आगू-पाछू पाँचोकेँ करैत देख सोराजीलाल पुन: विचारमे संशोधन करैत बजला-

“कान पकैड़ कऽ उठब-बैसब छोड़ि पाँचोकेँ थूक चटबाउ।”

q

शब्द संख्या : 2156, तिथि : 15मई2018

---

[1]पाहीपट्टीक

[2]कामत

[3]देवचरण

[4]बीतल समयक

[5]चौकारी टेक्स असुलनिहार

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

रबीन्द्र नारायण मिश्र- १.नमस्तस्यै- उपन्यासक आरम्भ (आगाँ) २.लघुकथा- सनकल

१

रबीन्द्र नारायण मिश्र

नमस्तस्यै

उपन्यासक आरम्भ

३.

समयक चक्र आगा घूमल। घुमैक छलै। हम अपन माएक कोरमे सुरक्षित रही। दूधपीबा बच्चाकेँ आओर चाहबे की करी?दूध आओर दूलार दुनू भेटि रहल छल। मुदा हमरा की पता जे हमर बाप हमरा आबए-सँ पहिनहि प्रस्थान कए चुकल अछि। हमरा की पता जे जँ हम बेटा भए जन्म लितहुँ तँ ओहि राजपाटक उत्तराधिकारी होइतहुँ जे बेटी भेनहि चूकि गेलहुँ। मुदा हमर माएकेँ एकर अखियास रहैक। घरबला गेलै से कष्ट छलैहे, हमरा बेटा नहि भेने दोसर-दोसर कष्ट होमए लगलैक।

क्रमशः दियाद-बादक रुखि बदलए लागल। मसोमातक सामाजिक हैसियत जे हेबाक चाही से भए गेल। असगर हमर माए की-की करितए? हमरा पालथि, हमर बापक असमय निधनक स्मरणमे दिन-राति अपसियाँत रहथि। गुजर-बसरक व्यवस्था करथि। समाज ओ कानूनसँ मात्र खोरिसक अधिकारिणी छली, से भेटि रहल छलनि। हमर चिन्ता सेहो ओकरा होइत छलैक। केना बढ़ब, के देखत, केना बिआह होएत?

हमरा लए एतेक चिन्ता तखनहिसँ करब जरूरी नहि छलैक। हमरा अखनो से सोचि हँसी लागि जाइत अछि। बिआह कए अपन जिम्मेदारीक इतिश्री करबा हेतु व्याकुल रहबाक कोनो तरहेँ उचित नहि कहल जाए सकैत अछि। आइ-काल्हिक समयबला गप्प नहि रहैक। ओ समय छलैक बालिका बधूक। जतेक कम बएसमे बेटी बिआहल जाएत ततेक प्रतिष्ठा सुरक्षित रहत। लोकक सोच एहने रहैक। ताहिमे एकटा मसोमात कइए की सकैत छली?

एक असामयिक घटना जाहिपर ककरो वश नहि छलैक, जे हमर युवा, स्वस्थ सभ तरहेँ सम्पन्न पिताक हेदावसान कए देलक, ओहि परिवारक भविष्यकेँ उलटि देलक। जँ हमर पिता जीवित रहितथि, तखन ककरो हिम्मत नहि होइतैक जे हमर माएकेँ एना दुरदुरौबति। जे से एकटा उपदेश लए ठाढ़ रहथि। ओकर आर्थिक सामर्थ्यकेँ एना निचोड़िनहि सकैत। मुदा ई सभ तँ आब मात्र कल्पने रहि गेल छल। यर्थाथक धरातलपर ठाढ हम एकटा नान्हिटा बच्चा आओर तकर मसोमात माएकेँ कोनो बहुत विकल्प नहि छलैक।

सभ किछु होइतो गाम गामे होइत छैक। हमर बापक सहोदर तँ भाँगमे मस्तंग रहैत छलाह, मुदा हुनकर पितिऔत सभमे कए गोटाक ध्यान हमरापर रहैत छलैक। एक दिन हमर पित्ती अपन पितिऔत सभसँ गप्प करैत छलाह कि ओ सभ हमर चर्च उठा देलखिन। सभहक बच्चा स्कूल जाइत छलैक। हम असगर घरमे टल्ली मारैत रहैत छलहुँ। पाँचम बर्ख भए गेल छल...।

हमर ककाकेँ माथमे ई बात धँसलैक। आन बच्चा सभक संग हमरो नाम स्कूलमे लिखा देलक। पहिलबेर मास्टरक मुहेँअपन नाम सुनलिऐक-

"अपराजिता।"

हम कतेक प्रशन्न भेल रही। ओहि दिन स्कूल जाए। मारि बच्चा सभकेँ हँसैत, बजैत देखलिऐक। चटिआ सभकेँ खाइत रहैत देखिऐक। बच्चा सभकेँ खेलाइत, धुपाइत देखिऐक। ततेक नीक लागल जे नित्य

भोर होइते माएकेँ स्कूलक तैयारी करए हेतु विवश कए दिऐक। स्कूल हमरा हेतु जबरदस्त आकर्षण भए गेल छल।

नित्य-प्रतिक दिनचर्यामे स्कूल जाएब सभसँ प्रिय लगैत छल। गामक एक छोरपर स्कूल छल। ओहिठाम पाँचमा धरि पढ़ाइ होइत छल। आगा पढ़बाक हेतु गाममे स्कूल नहि छलैक। ताहि हेतु गामसँ बहरायब जरूरी छल। गामसँ पाँच माइल दूर उच्च विद्यालय छलैक। गामक एकाधटा बच्चा ओतए पढ़ैत छल। दूरी ओ कतेको तरहक असुविधाक कारण अधिकांश बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ पाँचमे धरि सीमित भए जाइत छल। तकर बाद ओ सभ अपन पुश्तैनी व्यवसायमे लागि जाइत छल। एहन परिस्थितिमे हम आगा पढ़ि सकब तकर सम्भावना बहुत कम छल। तकर हमरा कोनो चिन्ता नहि छल। सत कही तँ ज्ञानो नहि छल जे पाँचमाक बादो पढ़ाइ होइत छैक आओर जौं होइत छैक तँ कतए? बहुत आगा सोचि कए होइतैक की? जखन जे हेबाक हेतैक सएह हेतैक। तँ हमर अभिप्राय वर्तमानमे ओहि स्कूलक नित्य-प्रतिक दिनचर्यामे बान्हल प्रर्याप्त छल।

स्कूलमे कैटा बच्चा सभ हमर दोस्त बनि गेल। ओहिमे अधिकांश आस-पासक गामक छली। तँ स्कूलक बाद हुनका सभसँ भेँट नहि होइत छल। स्कूल जेबाक एक प्रमुख आकर्षण अपन दोस्त सभसँ भेँट-घाँट होइत छल।

स्कूल लग पहुँचते जेना चुहचुही बढ़ि जाइत छल। बच्चा सभकेँ फुदकैत-खेलैत देखि हमरो मोन ओहिमे अविलंब मिलि जेबाक हेतु व्यग्र भए जाइत छल। स्कूलपहुँचलहुँ, झोरा फेकलहुँ आओर भागलहुँ बच्चा सभक लग। पता नहि कहाँसँ एतेक गप्प सभ फुराइत छल। ताबतेमे प्रार्थनाक घन्टी बजैत। बच्चा सभ भागैत प्रार्थना करए। हमर स्वर नीक छल। प्रार्थना करबेबाक हेतु हमरे भार देल गेल छल। हम निधोख सुस्वर सरस्वती बन्दना करी आओर तकर बाद प्रारम्भ होइत छल पढ़ाइ-लिखाइ जे चारि-पाँच घन्टी धरि चलैत रहैत छल। बीचमे खेलक घन्टीमे राजकुमार,हरिनन्दन, अरुण, गरमसिंह एक दिस आओर लड़की सभक एकदिस खेल-धूप होइत छल।

q

४.

एक दिन साँसे गाममे हल्ला भए गेलै जे अपराजिता हेरा गेल। क्यो कहैक लकरसुँघा आएल रहैक, वएह लए चलि गेलैक। क्यो किछु, क्यो किछु कहैक। जतेक आदमी, ततेक तरहक गप्प। हमर माए तँ छाती पीटैत-पीटैत बेहाल रहैक। हमर पित्तीकेँ दस हजार फज्झैत केलक। मुदा ओ की करितथि? भाँग पीबएसँ हुनका फुरसति होइतनि तखन ने कोनो आन बातपर ध्यान दीतथि।

भेलै ई जे हम स्कूल हेतु विदा भेलहुँ जरूर मुदा रस्तामे एकटा बबाजी लबनचूस देलक। लबनचूस खाइते हम बेहोश भए गेलहुँ। तकर बाद की भेलैक, किछु मोन नहि अछि। दू दिनक बाद जखन होश आएल

तँ देखी जे एकटा कोनो विशाल भवनमे पड़ल छी। चारूकात बन्द कोठरीमे हम राखल गेल रही। ने क्यो आबि सकैत छल आओर ने जा सकैत छल। हमरा ओहि कोठरीमे कोनो चीजक अभाव नहि छल। तरह-तरहक खेलौना, नाना प्रकारक मधुरसँ भरल ओहि कोठरीमे हम असगरे छलहुँ। कखनो काल एकटा बुढ़िया हमर हाल-चाल पुछए अबैत। मुदा हमरा माए मोन पड़ैत,गामक बच्चा मोन पड़ैत, स्कूलक खेल-धूप मोन पड़ैत, आँखिसँ नोरक धार बहैत देखि ओहि बुढ़िआकेँ सेहो कना जाइक मुदा ओ बाजैत किछु ने। अपना भरि हमरा बौंसबाकप्रयत्न करैत। किछु-किछु खुआबक प्रयास करैत आओर चलि जाइत।

ओमहर हमर माएक हाल-बेहाल छलैक। जीबाक एक मात्र सहारा हमहीं छलिऐक। ओहो परोक्ष भए गेल छलैक। छाती पीटैत-पीटैत कतेको बेर बेहोश भए गेल। डाक्टर, बैद बजाबए पड़लैक। कहुना-कहुना कए ओकर जान बाँचल।

हम ओहि कोठरीमे बन्द छटपटाइत रही। ओमहर हमर माए बफारि तोड़ए। मुदा हमरा गामसँ अपहृत केनिहार सभ अपन धन्धामे लागल छल। ओकरा सभकेँ पता रहैक जे हम अपन परिवारक एकमात्र आशा छी। हमर घरक सम्पन्नताक सेहो ओकरा सभकेँ जानकारी भए गेल रहइ। इएह सभ सुनि हमरा अपहृत करबाक योजना बनाओल गेल। कतेको दिन ओ सभ हमर पछोड़ केलक। हमर नित्य-प्रतिक आवागमनक समय, रस्ता सभक रेकी केलक। आओर एक दिन अपन लक्ष्यमे कामयाब एहि मोनेमे रहल जे हमर अपहरण कएलेलक। ओकरा सभकेँ ई अनुमान नहि भए सकलैक जे हमरा बाप नहि छल। ओ सभ नहि बुझि सकल जे बिना बापक बेटी गाछसँ खसल पात जकाँ अछि जे खसत तँ सुखा कए नष्टे होएत आओर किछु नहि। हमर अपहरणकर्ता सभ ढाकीक-ढाकी टाका उगाही करए हेतु योजना बना रहल छल। ताहि हेतु हमर पित्तीकेँ गुमनाम चिट्ठी पठौलक जे तीन दिनक पेसतर ओकरा सभकेँ दू लाख टका देल जाए तखने अपराजिताकेँ छोड़ल जाएत अन्यथा ओकर जीवित लौटबाक कोनो सम्भावना नहि। संगहि एहि मामलाक जानकारी पुलिसकेँ नहि देल जाएत अन्यथा परिणाम घातक होएत। पैसा कखन ओ कतए, ककरा देल जाएत से अलगसँ ओही दिन सूचित कएल जाएत।

ओहि समयमे दू लाख टकाक बड़ महत्व होइत छल। चिट्ठी पढ़ि हमर पित्तीकेँ तँ जेना लकबा मारि देलकै। अबाजे नहि निकलै मुदा हमर मोह तँ रहबे करइ। अपहरणकर्ताक हाथे हमरा मरए तँ नहि दितथि। तखन की करथि से फुरा नहि रहल छलनि।

ओ हमर हालत देखि बुढ़िआकेँ बहुत दुख होइक। ओ स्वयं अपहरणकर्ता सभसँ त्रस्तछल। ओकर हार्दिक इच्छा रहैक जे जेना-तेना हमरा ओहिठामसँ निकालल जाए, मुदा कोनो गरे नहि बैसैत छलैक।

ओहि बुढ़ियाक अपने खिस्सारहैक। ओ स्वयं अपन अतीतसँ ओझराएल, थाकल, झमारल परिस्थितिसँ लाचार छल। नहि चाहिओ कए ओहि दुर्दान्त अपराधीक संगोरमे रहैत छल आओर ओकर सभक कहल करैत छल। की छलैक ओकर मजबूरी ओ किएक एना मजबूर भेल छल? तँ सुनि लिअ।

ओहि बुढ़िआक नाम असलमे छलैक पुष्पा। ओ एकटा पैघ घरक पुतोहु छलि। दियादी झगड़ामे ओकर पतिक हत्या भए गेलैक। हत्या केनहार ओकर पतिक अपने सहोदर छलैक जे आब एहि अपराधी गिरोहक

सरगना बनल अछि। भाएक हत्याक जूर्मने ओकरा आजन्म कारावास भेल। मुदा ओ जहल फानि कए पड़ा गेल आओर से अखन धरि पड़ाएले अछि। पता नहि ककरा-ककरासँ ओकर संगति भेलैक, कतए-कतए गेल। अन्ततोगत्वा ओ लूट-पाटआओरहत्याक कतेको मामलामे फँसैत चल गेल।

पुष्पाक पतिक हत्याक बाद ओकर आओर ओकर एकमात्र सन्तानक रक्षाक कोनो व्योंत नहि रहि गेल। एक राति ओकर देओर ओकरा सभकेँ गामक घरसँ उठा अनलक। कहि नहि, कतए-कतए घुमबैत रहल। घुमैत-घुमैत ओ सभ एहि जंगल महलमे आनल गेल। ओकर बेटा कतए निपत्ता भए गेल से बुझिओ नहि सकल। कनैत-कनैत ओकर नोर सुखा गेल। हृदय पाथर भए गेल। विक्षिप्त जकाँ रहए लागलि। मुदा ओकर बच्चाक कोनो अता-पता नहि लागल। पुष्पा अपन दिओरकेँ कतेको बेर अपन बेटाक मारफत हाथ-पैर जोड़लक मुदा ओ ठहाका पाड़ए लागए। एक व्यंगपूर्ण एवम् कूड़तासँ भरल आक्षेपक संग कतहु घसकि जाइत। हत्या, लूटपाटओकर नित्य-प्रतिक धन्धा छल। ओ तँ सजाआप्ताछलहे। आब आओर की क्यो करितैक? जेलमे ओ मोछा ठाकुरक नामसँ कुख्यात छल। जाबे जेलमे रहल, जेलक दादा रहए। छोट-मोट नवागन्तुक कैदी सभ ओकर चाकरी करैत छल। जेलर बाबू सेहो ओकरासँ डरैत छलैक। कारण ओ स्वयं चोर रहैक। कैदी हेतु देल गेल अन्न-पानिकेँ चोरा कए बेचि दैक। अपन पैघ-पैघ मोछक चलते मोछा ठाकुर नाम प्राप्त कए ओ गौरवान्वित छल। भए सकैए मोछा ठाकुरक जेलसँ फरार होमएमे जेलरोक हाथ रहल होइक। ताहि बातक जाँच पड़ताल भेबो केलैक। मुदा जेलर बेदाग साबित भेल आओर मोछा ठाकुर फरार भेल से भेल रहि गेल।

q

५.

दू दिनक बाद फेर क्यो हमर पित्तीकेँ एकटा चिट्ठी पठओलक। ओहि चिट्ठीमे ओकरा स्थान ओ समयक सूचना देल गेलैक, जतए ओकरा फिरौती लए पहुँचक रहैक। ओहिमे ईहो लिखल रहैक जे दगाबाजी केलापर गम्भीर परिणामक हेतु तैयार रहए।

ओतेक पैसाक जोगार एतेक जल्दी नहि भए सकलैक। तथापि जे किछु सम्भव भेलैक से लए ओ नियत समयपर नियत स्थानपर पहुँचल। मोछा ठाकुर स्वयं ओहिठाम मौजूद छल। पैसाक बोरा लेबाक हेतु अग्रसर भेल कि कतहुँसँ गोली चलबाक आबाज भेल। मोछा ठाकुर ओतहि धराम भए गेल।

ओमहर पुष्पा हमरा लए ओहि कोठरीसँ निपत्ता भए गेल। भेलैक ई जे मोछा ठाकुर ओकरा हमरा सुंझाओगाही करए गेल छल। पुष्पाकेँ ई मौका भेटलैक आओर हमरा लेने भागलि। संयोगवश भगैत-भगैत ओ ओहीठाम पहुँच गेल जतए मोछा ठाकुरक लाश पड़ल छल। हमर पित्तीक नजैर हमरापर पड़लैक। ओ झपट्टा मारलक आओर हमरा लैत इएह ले वएह ले चम्पत भए गेल।

असलमे भेलैक ई जे मोछा ठाकुरक प्रतिद्वंदी सभ पुलिसक मुखविर बनि गेल छल। ओ सभटा सूचना पुलिसकेँ दए देने रहए। पुलिस तँ ओकरा पाछा छलहे। पुलिसकेँ अबैत देखि ओ भागवाक प्रयत्न केलक, मुदा सफल नहि भए सकल। कनीके कालमे ओकरा आओर पुलिसमे गोलीवारी होमए लगलैक आओर ओ पुलिसक गोलीसँ ठामहि रहि गेल।

इलाका भरिमे हमर लौटि जएबाक समाचार बिजली जकाँ पसरि गेल। हमरा ओतेक होश नहि रहए मुदा एतबा तँ बुझलिऐक जे एकटा महान संकटसँ उबरि गेल रही। हमर माएक प्रशन्नताक अंत नहि छल। ओकरा फुरेबे नहि करैक जे हँसए कि कानए। अफरातफरीमे पुष्पा दिस ककरो ध्यान नहि गेल। हमरा लए कए हमर पित्ती गाम भागल। लोक सभ सेहो गाम दिसि ससरल। मुदा पुष्पा...। ओ तँ मोछा ठाकुरकेँ मृत देखि ठहाका पाड़ए लागल। ठहाका ततेक विभत्स ओ जोरदार छल जे सम्पूर्ण वातावरणकेँ हिला कए राखि देलक। बात एतबेपर नहि रूकल। ओ प्रचण्ड पागल जकाँ मोछा ठाकुरक लहासक चारूकात नाचए लागलि, गाबए लागलि। बड़बड़ाए लागलि-

“आब ले हमर जमीन-जायदाद। ले हमर घर घराड़ी। हमर घरबला आबिते होएत। तोरा छोड़तह नहि। अन्यायक प्रतिकार कइए कए रहत। अपन अधिकार लइए कए रहत।”

महाभारतमे दुस्साशनक लहासपर नचनिहार पुरुष छलैक भीम जकरा डरे के के ने डराइक। जकरा कतेको हाथीक बल रहैक। मुदा एतए तँ एकटा वृद्ध महिला चिर प्रतिक्षित प्रतिशोधक अग्निमे धधकि रहल छल। की ओहो मोछा ठाकुरक छाती फारि देत? लगए तँ तेहने।

पुष्पाक अट्टाहास सुनि किछु ग्रामीण घुरि अएलैक। ओ सभ जस-के-तस मुरुत जकाँ ठाढ़े रहि गेल। चीत्कारक स्वर ओकरा सभकेँ गतिशून्य कए देलक। क्यो किछु बुझिए नहि पाबि रहल छल। आखिर ई वृद्धा के अछि? की कहए चाहैत अछि? ई मृतक एकरा कोन अन्याय केलक?

क्यो किछु कहैत ताहिसँ पहिने ओ फेर चिकरए लागलि-

“कतेक बेर अएताह राम?कतेक पाथर बनल अहिल्याक उद्धार करताह। ई कलियुग छैक। सुनैत जाउ औ लोक सभ। तँ ई राक्षसक नाश रामक प्रतीक्षा नहि कए सकल।”

एतबे बाजल की फेर वएह ठहाका मारलक। निट्ठास पागल भए गेल छल। गौंआँकेँ के किछु नहि बुझा रहल छलैक जे की करए?

पुष्पा ककरो सुनए हेतु तैयार नहि छलि। आखिर बात हमर पित्तीक कान धरि गेलैक। हमरे संगे तँ ओ आएल छलि। ई बात बुझिते हमर पित्तीक आत्मा काँपि उठल। मुदा ओ कोनो हालतमे हमरा एसगर नहि छोड़ए चाहैत छल। तँ चारि-पाँचटा बुझनुक लोककेँ पठौलथि जे पुष्पाकेँ कहुना अपना ओहिठाम लए आनए।

पुष्पाक उग्र रूप देखि ककरो ओकरा टोकबाक हिम्मत नहि भेल, बुझेबाक तँ बाते छोड़ू। ओकरा हाथमे दबिला पता नहि कतएसँ आबि गेल। ओ बेरि-बेरि मोछा ठाकुरक चारूकात घुमि-घुमि नृत्य कए रहल छलि।

सभ डरा गेल,कही ओ दबिला ओकरेपर ने चला दैक। इएह ले वएह ले सभ अपन जान लए भागल। पुष्पा ओहिना रहि गेलि।

कनी कालमे पुलिसक आला अधिकारी सभ ओतए पहुँचल। मोछा ठाकुरक लहासकेँ थाना लए जेबाक रहैक। एक ट्रक पुलिस आएल। चारूकात घेरि लेलक। अधिकांशक हाथमे हथियार छल। जकरा हाथमे से नहि छल से सभ गोटे मोट-सोट लाठी भाँजि रहल छल। देखिते-देखिते मोछा ठाकुरक लहासपर पुलिसक कब्जा भए गेलैक।

लहास चल गेल मुदा पुष्पा एसगरे ओतहि चिकरैत-भोकरैत रहि गेल। कतहु क्यो नहि। लहास चलि गेलाक बाद ओ धराम दए खसल आओर राति भरि ओहिना रहि गेल। भोरे लोक ओकरा तकलक। ओ ओहिना बेसुध पड़ल छलि। हमर माए सेहो उत्सुकतावश ओकरा देखए गेली। ओ ओकरा देखि छगुन्तामे पड़ि गेली। ओ तँ ओकर नैहरक छलैक। ओ पुष्पाकेँ नाम लए कैबेर उठौलक। पुष्पा तकलकै। आँखि खोलिते हमर माएकेँ चिन्हि गेली। ओ माएकेँ बात मानि ओकरे संगे विदा भए गेली। इलाकामे गर्द पड़ि गेल। हमरा ओहिठाम ओकरा देखक लेल के के नहि आएल।

एहि घटनाक बाद गाममे लोक सतर्क भए गेल। क्यो अपन बच्चाकेँ असगरे कतहु नहि जाए दैक। कैटा बच्चा स्कूल गेनाइ छोड़ि देलक। हमरो संग सएह भेल। हम चौथा पास कए पाँचमामे गेले रही कि एहि आफतमे फँसि गेल रही। हमर पित्ती कोनो हालतमे स्कूल पठबए हेतु राजी नहि भेल।

१

२

रबीन्द्र नारयण मिश्र

लघुकथा

रबीन्द्र नारयण मिश्रक

लघुकथा

<u>सनकल</u>

नहरिक काते-काते वो चल जाइत छल। फाटल-चीटल नुआसँ देहक लज्जावरण दैत दूनू हाथे दूनू बच्चाकेँ कोरतर दबने एक सुरे बढ़ल जाइत रहए। जेठक ठहा-ठही रौद। चारूकात कतहुँ क्यो नहि। मुदा ओ अपसियाँत भेल बढ़ले जाइत छलै। कि भेलै ओकरा से नहि कहि? प्राय: ओ सासुरसँ रूसि गेल छल। थाकल, ठेहियाएल वो पाकड़िक छाहरि देखि बैसि गेल। ओकर आँखिसँ नोर झर-झर खसए लागल। के पोछत ओकर नोर? सुनैत छल जे सासुरमे लोककेँ बड़ सुख होइत छैक। सासु-ससुर, दिओर, दियादिनी सभ छलै ओकरा। मुदा सभ जेना जन्मी दुश्मन रहैक ओकर। ओकर अनेरे खिदांस करब जेना ओकरा सभक

धर्म रहैक। खेबो-पीबोक ओकरा कष्टे छलैक। घरबला कमासुत छलैक। मुदा भैयारीमे सभसँ छोट होयबाक कारण परिवारक ऋृण ओकरापर बहुत रहैक।भाए सभ गरीबीमे छलैक। तँ जे चारि-कौरी कमाइतो छल से कैठाम बँटि जाइत छलैक। स्त्रीसँ ओकरा प्रेम तँ छलैक मुदा कालक प्रभाव ओकरो नहि छोड़लकै। समय बीतलासँ ओकरा सौन्दर्य-सौष्ठव कम भए गेल छलैक आ ओकर ध्यान क्रमश: कोनो आन स्त्रीपर केन्द्रित होमए लागल छलैक। ओ स्त्री सुन्नरि तँ छलै, संगहि ओकरामे आधुनिकताक पुट सेहो छलैक, आंगिक चमत्कार छलैक आ यौवनक मादकता ओकरा आकर्षणक केन्द्र बना देने छलैक...।

कोना-ने-कोना इएह बात सभ ओकरा कानमे पड़लैक जे ओकरा पचाओल नहि भेलैक। दरिद्राक भार फराक,तंदुरूस्ती घटैत से छलैक आ ओमहर घरबलाक उपेक्षापूर्ण आचरण...।

मोन जेना बेरक्त भए गेल रहैक आ तँए एक दिन वो सासुरसँ काँखक तर बच्चाकँ दबने भागि गेल।

नैहर धनिक तँ छलै मुदा भाए सबहक राज। पिता मरि गेलै आ माए सेहो बुढ़ भए गेल छलैक। क्यो घरमे मोजर नहि करइ। मुदा बेटीक तँ की नहिरे की सासुरे। आ तँए जखन वो नैहर पहुँचल तँ चारूकात गामक नव-पुरान लोक ओकरा घेरि लेलक।

“किछु सुनलिऐ? फलनमाक बेटी सासुरसँ भागि अएलैक अछि।”

इत्यादि-इत्यादि, जकरा जे फुराइक से बाजैत छलै। आओर वो हतप्रभ बीच अँगनामे ठाढ़ रहए। के खोंइछ खोलत आ के पटिया ओछा कए बैसए कहतैक। अपने घरमे वो आन बनल छल। क्यो सहारा नहि बुझाइ।

ताबतमे प्राण दाइ कतहुँसँ एलखिन आ कहलखिन-

“दूर जाइ जाउ। केहन पाथर भए गेलहुँ अहाँ लोकनि..! बेटी डाटी छइक आइ आएल, काल्हि चल जाएत। तकर अनादर किएक करैत जाइत छी।”

कैटा कनियाँ सभ आबि गेल छलैक ओहि आँगनमे। तीनटा ओकरभाए छलैक। भरि-भरि दिन वो जेठकाकँ कोरा खेलबैत रहैत छलैक। जाड़क मासमे रौदमे तेल लए देह मलैत रहए आ कनेको जहाँ बच्चाकँ सर्दी होइक तँ जेना ओकर प्राण सन्न दए रहि जाइत रहैक। मुदा आइ चारि-पाँच दिन अएला ओकरा भए गेल छलैक आ ताधरि जेठकासँ टोका-चाली नहि भेलैक।भाए सभ तीनू तीन ठाम भए गेल छलैक आ माएकँ तीनू गोटे मिलि कए फराक खोड़िस दैत छलैक।

हारि कए जखन ओकरा कोनोभाए नहि पुछलकै तँ माएक संगे रहए लागल। माए तँ माए होइत छैक किने। रहि-रहि कए नोरक धार बहाबए लगैत छलैक। उच्च सुनैत छलैक आ तँ ओकरासँ जे खुलि कए गप्पो करैत सेहो नहि होइक। कारण जे ओकर बात कनियाँ सभ सुनबाक हेतु टाट लागल रहैत छलैक। कहबीछैक जे गेलहुँ नेपाल आ कर्म गेल संगे। सएह परि ओकरो भेलैक। सासुरमे सासु, ननदि आ दियादिनी

तँ नहिरामे ई कनियाँ सभ ओकर जानक जपाल भए गेल छलैक। तैयो माए लग छल। अहिठाम किछु स्वतंत्रता तँ छलैक।

"सएह की हाल अछि ओकरा सन-सन हजारो कन्याक जकरामे सासुर ने नहिरे- क्यो कतहुँ सहारा नहि होइत छैक?"

सएह सभ सोचैत रहए। सोन दाइ सोन दाइ, सौंसे गाममे सोर रहैत छलैक। गोर नार दप-दप छल वो। ओकरामे सभ गुण छलैक। मुदा गुणसँ की हो? टाकाक बिआह होइत छैक। पिता धनिक तँ छलैक मुदा कंजूस छलखिन। बेटीक भाग नहि देखलखिन आ एकटा साधारण लोकसँ ओकर बिआह करा देलखिन सौंसे गाम छिया-छिया कहलकै।

"सएह हौ, लोचनो बाबू, विचार घोरि कए पीबि गेलाह। बेटीक भविष्यक कनियाँ विचार नहि केलाह। पाइ तँ अबैत जाइत रहैत छैक।"

इत्यादि-इत्यादि। बेटा सबहक भविष्यक चिन्ता जबरस्त छलनि। की होएत की नहि? बेटी तँ दोसर धर चल जाइत छैक। ओकरासँ वंशक रक्षा तँ नहि होइत छैक। मुदा बेटा तँ कुलक आधार छैक। सएह सभ हुनकर पुरनका मिजाज सोचैत रहैत छल।

सासुरमे दरिद्रा चरम सीमापर छलैक। सभ दियादिनी मरूआ कूटए। रोटी ठोकए। धनकुट्टी करए। द्विरागमनक पन्द्रह-बीस दिन धरितँ ओकरा क्यो किछु नहि कहलकै। मुदा कालक्रमे सभक व्यवहार कठोर होइत गेलैक। पटिदारी छलैक किने।

"गे मैयो भरि दिन बैसल रहतौ जेना फरफेसरक बहु हो..!"

घरबला जाबत काल रहैक ताधरि क्यो ओकरा किछु नहि कहितै। ओकरा काजपर जाइते फेर वएह रामा वएह खटोली। ओकरा बासन छुआओल गेल आ क्रमश: ओ पार लगा कए चौका-बासनक काज करए लागल। मुदा ओहि घरमे तँ पटिदारी छलैक। जेठकी दियादिनी बड़ क्रूड छलैक। ओकर इच्छा जे कुटनी-पिसनीमे सेहो पार लगौक। किछु दिनक बाद ओकरा सन्तान हेबाक सम्भावना भेलैक। मुदा ताहिसँ की? भानस-भात, कुटनी-पिसनी आ ताहिपर सँ सासु ओ ससुर तथा दियादिनी सबहक कटाह गप्प-सप्प।

सुनैत-सुनैत ओकर दम फुलैत छल। मुदा करए की? ककरा कहितै अपन दुख। चारूकात अन्हारे-अन्हार बुझाइक। जकर घरोबला ओकर पक्षमे नहि होइक ताहि स्त्रीगणक भगबाने मालिक होइत छैक आ सएह परि ओकरो छलैक। ओना, नवमे ओकर घरबला बड़ आव-भाव रखलकै। नव-नव कपड़ा-लत्ता सभ चीज आनि-आनि दैत छलैक।

मुदा ओकरा ध्यान जेना क्रमश: हटैत गेलैक। ओ एसगरे हकासलि-पियासलि भरि दिन आ दुपहर राति धरि काज करैत रहैत छल। क्यो एहन नै भेटलैक जकरा अपन मोनक भाव कहितै, जकरा लग मोन भरि कनितै।

"उपाय तँ छलैक। मुदा बोराक आम आ बेटीमे मिथिलामे कोनो अन्तर नहि छैक। साँठि देनहि कल्याण। आ जँ एक बेर ककरो गारामे बान्हि देलिअनि तँ फेर जन्म भरिक लेल निचैन भए जाउ। धन्यवाद कही मिथिलाक समाजकेँ जे एखनो धरि अपन स्त्री समाजकेँ एतेक निरघीन जीवन वितएबाक हेतु मजबूर कए दैछ।"

इएह सभ बात ओकर मोनमे उठैत रहैत छलैक। ओमहर ओकरभाए सभ अपनामे भिन्न-भिनाउज कए लेलकै आ सभ अपना-अपनीक धन जमा करैत छलैक। सभकेँ कोठा छलैक। जहिआ ओ नैहरसँ कनैत बिदा भेल छल तहियो ओकर पिताकेँ कोठा छलैक। मुदा अखन तँ ओकरा बुझाइत जेना दोसर ठाम आबि गेल हो। चारूकात पोखरिया-पाटन छलैक। सएह, धन एतेक आ मोन कतेक छोट छै ओकरभाए सबहक। ठीके छै कहबी जे टाका आगू लोक सभ सम्बन्ध बिसरि जाइत अछि।

किछु दिन नैहरमे रहलाक बाद ओकर सासुरक लोक अएलैक। बड़ उपरागा-उपरागी भेलैक। आ ओकरा फेर लोक सासुर लए गेलैक। मुदा एहि बेर तँ ओकर सासु बाढ़निये नेने ओकर स्वागत केलक। एवम्-प्रकारेण आनो-आनो लोकक आचरण ओकरा प्रति कठोर होइत गेलैक। ओकर गहना सभ बेचि देल गेल रहैक। ओ क्रमश: अकान ओ सुन्न भेल जाइत छल।

एक दिन ओकरा ने आगू फुराई आ ने पाछू।दिमाग बिजलीक करेन्ट जकाँ फेल कए गेलैक। ओ फेर भागल नैहर। एहि प्रकारे नैहर-सासुरओ कै बेर केलक। सभठाम ओकरा उपेक्षा भेटैत छलैक। नैहरोसँ ओकर मोन उचटि गेल रहैक। तँ ओ सोचलक जे बरे लग चली। जेना-तेना हराइत-भुतियाइत ओ बरक डेरापर पहुँचलतँ जे देखलक से देखि कए गुम्मे रहि गेल। भोरक समय छलैक ओकर घरबला कोनो दोसर स्त्रीक संग एसगर घरमे रहैक। ओ चोट्टे घुमि गेल आ भागल भागल-भागल नहि जानि ओ कतए गेल।

एमहर ओकर खोज-पुछारि होमए लगलैक आ कएक दिनक बाद एकटा टीशनपर ओकरा लोक बैसल किछु-किछु रखने फाटल-चिटल कपड़ा पहिरने देखलक। ओ ठहाका भरि कए हँसैत छलैक- जेना समस्त समाजपर हँसि रहल हो। ओकरा ने कथुक लाज छलैक आ ने धाक। मुदा लोक सभ कहए लगलैक जे ओ एकदम सनकि गेल छल। ओ एकदम गुम्म भए गेलैक। तकर बाद फेर कहिओ ककरोसँ नहि बजलकै।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३. पद्य

आशीष अनचिन्हार

गजल

किछु काज भगवान भरोसे
किछु काज शैतान भरोसे

किछु लोक नोरेसँ भरल अछि
किछु लोक मुस्कान भरोसे

किछु आँखि सोनासँ सजल छै
किछु आँखि दुभिधान भरोसे

बहुते मजा आबि रहल छै
किछु बात अनुमान भरोसे

लाभक कथा के क' रहल अछि
किछु लाभ नुकसान भरोसे

सभ पाँतिमे 2212-21122 मत्राक्रम अछि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

डॉ. शिवकुमार प्रसाद

किछु कविता

शहर ओ गेल

शहर ओ गेल मनुक्ख बनए लेल

गाममे रहि बन-मानुख छल
शहरक पाथर केर जंगलमे
ऊहो आबि आइ पथरा गेल।
शहरक पाथर केर...।

गाममे छल भाए-बहिन सभ
कियो बाबू कियो काका छल
भैया-भौजी बेटी-भतीजी
नै कियो बिनु नाता छल।
शहरमे जाइते रिश्ता-नाता
सभटा मटिया-मेट भऽ गेल
शहरक पाथर केर....।

पथराएल शहरी पाथरमे
कनिको मानवता नै बाँचल
चारि बर्खसँ चालीस बर्ख केर
बुच्ची, जननी बलि चढ़ि गेल
शहरक पाथर केर...।

बाट-बटोही देखतो आन्हर
सुनितो रूदन बहिर भऽ गेल
पशुतो एहेन कुकर्म सुनि-सुनि
चुडुक पानिमे डुमि मरि गेल
शहरक पाथर केर जंगलमे
सभकेँ सभ आइ पथरा गेल।

साँझ

साँझक संगे भागि रहल अछि
चिड़ै-चुनमुन बाँसपर
बरद-गाए केर जेबर तहिना

दौड़ि रहल अछि बाटपर।

गौधूलिसँ पाटि रहल छै
नभ-आँगन घर-गामकेँ
बछा-बाछी चिकरि रहल छै
टोलक-टोल बथानपर।

सुरुज सिनुरिया अलोपित भेल
धूरा केर एहि मेघमे
बेटी-बहुरिया दीप नेसने
साँझ देथि आँगन-दुआरपर।

बाट-बटोहिक डेग भेल नमहर
गाछी-बिरछी भेलै भियौन
नेना-भुटकाक दीठि उतारथि
दाइ-माइ ओसारपर।

आ गइ निनिया बाट तकैत छौ
हमर बौआ ओछैनपर
कथा-पिहानी घुमि रहल छै
बौआ केर लिलारपर।

ढोलक बोखार

सुनलक ढोलिया टिक भेल ठाढ़
गुणमन्ती भेल गामक भार
गाम-गाममे गुणमन्तीकेँ
छुटि रहल अछि आब बोखार
सुनलक ढोलिया...।

अगड़ा-पिछड़ा फेंटम-फेंट

बाप-दइयासँ होइ छै भेँट
पाँच बर्खसँ नीनक मातल
घुमि रहल कुरयाबैत पेट
कोना हएत आब नैया पार
सुनलक ढोलिया...।

दूरक ढोल सोहनगर छेलै
लगक ढोल छेलै भेल बेकार
दंगलक डगर सुनिते मातर
गुणमन्तीकेँ चढ़ल बोखार
सुनलक ढोलिया टिक भेल ठाढ़। q

खेबैया

सबहक नाहकेँ भेटल खेबैया
बिनु खेबैया हमरे नाह अछि
देखू पार आब केना लगैत अछि
बिनु खेबैया हमरे नाह अछि।

किनको टाका पार लगौतन्हि
किनको नेता पार लगौतन्हि
अपन-अपन बाँस भिरौने
बहुतो पार उतरलौ जाइ छथि
बिनु खेबैया हमरे नाह अछि।

दूर-दूर धरि नजरि खिरौने
ताकि रहल छी आँकि रहल छी
किनका पछुऔने पार लगत आव
कियो संगी नै भेटि रहल अछि
बिनु खेबैया हमरे नाह अछि।

किनको बड़का पैघ हबेली
किनको बड़का पागक डौड़ही
किनको सार किनको छनि साढ़ू
धोती जिनक अकास सुखाइत अछि
बिनु खेबैया हमरे नाह अछि।

माय हमर नव-कुम्भ नहेली

माय हमर नव कुम्भ नहेली
नै हुनका मन पापक गेठरी
नै हुनका मन बाँझक धोकरी
नेना-भुटुकाक साँस हास संग
जिनगी भरि ओ खूब नहेली
माय हमर नव कुम्भ नहेली।

नै कहियो ओ चानन केली
नै कहियो संन्यासिन भेली
गिरहस्थीकें स्वर्ग बूझि ओ
कर्मक संग प्रभु कें गुण गेली
माय हमर नव कुम्भ नहेली।

नै ओ विदुषी नै ओ सुन्नरि
नै आडम्वरी नै कनसोही
बाट-बटोही सभ जन हिनका
मनुक्ख रूपमे भेटल सिनेही
माय हमर नव कुम्भ नहेली।

मनक प्रयागमे त्रिविध तापकँ
कर्मक हुलासमे अपन गर्वकँ
अपन मनोरथ परक सुख लेल
आजीवन ओ डुमौने रहली

माय हमर नव कुम्भ नहेली।

छठि पाबैन

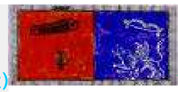
सबहक केरा सबहक नारियल
सबहक ठकुआ एक्केरंग
सबहक मनमे भक्ति-भावना
ठकुए सन छै एक्केरंग
सबहक ठकुआ एक्केरंग।

बाँसक पथिया बाँसक कोनिया
माटिक दिया एक्केरंग
मोट हौउ वा हौउ ओ पातर
सबहक मुड़ै एक्केरंग
सबहक ठकुआ...।

अल्हुआ-सुथनी, हरदी-आदी
सेब-समतोला एक्केरंग
नवका साड़ी नवका धोती
भुवन भास्कर एक्केरंग
सबहक ठकुआ...।

पोखरि हो कि कछेर धार केर
आँगनक पोखरि एक्केरंग
सभठाम पानिमे ठाढ पबनैतिन
सबहक व्रत छन्हि एक्केरंग
सबहक ठकुआ...।

सबहक अँगना गोबरे नीपल
नेना-भुटका एक्केरंग
सभकेँ छठि परमेशरी देथिन



अभिलाषित वर एक्केरंग
सबहक ठकुआ एक्केरंग।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

डॉ. शिवकुमार प्रसाद

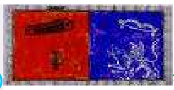
किछु अनुदित काव्य (मूल हिन्दी रजनी छाबड़ा)- आगाँ

(PAGHALAIT HIMKHAND

Maithili translation of 'PaighalteHimkhand'
An Anthology of Hindi Poems by Rajni Chhabra from Hindi into Maithili by Dr. Sheo Kumar Prasad.)

बन्हकी

हाथ जोड़ने
माथ
झुकौने
सिकुड़ल समटल सन
ठाढ़ छल ओ
खिड़कीसँ
झरैत
किरिण लग
अपन कलाकीर्तिक आगू
चित्रपट देखबैत छेलइ
क्षितिज छुवाक आसमे
पेंग भरैत
उन्मुक्त पाखी
आर सोझामे बिनु पाँखिक
चिड़ए सन



आहैत
भाव नेने
ओ चित्रकार
बन्हक राखि चुकल छल
अपन अनुभूतिकेँ
कल्पना
सम्वेदना
अपन कलाकेँ
संरक्षक लग। q

की जानि

छितराएल छै अकासमे
ऊँन सन
मेघक गोला
की जानि आइ परमतमो
कोन गुण धुनमे लागल छथि! q

परिचय

अन्हारकेँ
अपन छातीमे समेटने
जेना दीप बनबै छै
अपन दीपित परिचय।

ओहिना अन्तरमे
अपन नोर नुकेने

संसारकेँ देमए पड़त
मात्र अपन हँसी ।

अपन बेनाओं जिनगीकेँ
देमए पड़त अहिना
नव परिचय। q

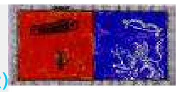
हमर दियारी

सेहन्ताक बातीसँ
जरेलहुँ
एकटा दियारी
अहाँक नाओं।

लाखक लाख दियारी
अहाँक सिनेहक
अपनहि
झिलमिला गेलइ। q

मनक बन्न केबाड़

एहिसँ पहिने की
अपन अधखरुआ कचोट
अहाँकेँ चकनाचूर कऽ दिए
सगर जिनगी हँसबासँ
कऽ दिए नचार
फोलि दियौ



मनकेर केवाड़
आ निकालि दियौ
अपन मनक विषाद।

दरद तँ सभकेँ हृदयमे रहिते छै
दरदकेँ पुरबे पुरुषासँ
सभकेँ सम्बन्ध छै
किछु अपनो कहू किछु हमरो सुनू
दरदकेँ मिल जुलि सहू।

एहिसँ पहिने कि ओ
बहैत बहैत बनि जाए भोकन्नर
सिनेहक मलहमसँ
करू ओकरा फराक
सिनेहक अमृत पटा
सुख दुख लिअ बाँटि
मनक संग जीवन
सिनेहसँ करू पूर
फोलि दियौ मनक बन्न केबार
आ बिषाद करू दूर। q

घा

मन आ आँखिक
बीच
बड़ गहींर
नाता छै
मनक घा

आँखिक
नोरे बनि ने
बहै छै। q

बहुत अछि

एक गोट सपना
निस्तेज आँखिक लेल।

एकटा सिसकी
निःशब्द ठोरक लेल।

एकटा चिप्पी
फाटल छातीकेँ
सिबाक लेल।

बहुत छै
एतेक समान
हमरा जीबा लेल। q

बौआइत मन

बौआइत मनकेँ
जखन जिनगीक कोनो
अनभुआर रस्तापर
अपन मनक संगी

मिल जाइ छै,

तँ ओकर चाह रहै छै
कहियो नहि रूकै
ओ रस्ता
एक एक क्षण बनि जाए
जुग सन
यात्रा अहिना चलैत रहए चलैत रहए
जुग जुगान्तर धरि। q

अहाँ बिनु

अहाँ बिनु
हिरदे एना
बेकल रहैत अछि
जे दिन उगिते
साँझ बितबाक
बाट ताकए लगै छी। q

केकरा चिन्ता रहै छै

केकरा चिन्ता रहै छै बिहाड़िक
बड़का अन्हरक पछाइत।

सभटा दुख छोट भऽ जाइ छै
कोनो बड़का बिपैत एलाक पछाइत। q

सन्तोषमे ओ सुआद केतऽ!

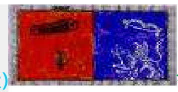
सन्तोषमे ओ केतऽ पाबी
जे बेकलतामे सुआद छै
सनकल बेकलतेसँ
भेटए सदैत सफलता छै।

सन्तोष जँ ठेकान तँ
रस्ता बेकलता छै। q

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

राजेश मोहन झा "गुंजन"

किनकर विकास?
(पूंजीवाद कि सर्वहारा)
(यात्रीजी "बाबा नागार्जुन" कें जन्म दिन पर)
सभ किछु बिकाय त'
चाने कें कीनि लेल
चमकैत धरा केर
इजोरिया के छीनि लेल।
सोती कें सोखि ओ
पानि बेचै छथि
बटुआ रहै भरल
एतबहि बूझै छथि
अपन दिन महमह क'
दोसर के दुर्दिन देल।
रस हुनक हिस्सा हम
आंठी चूसै छी
भाग विधि सँ भेटय


मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

जानै सूनै छी
हे विधना तोहूं बिकैलह
तोरो हम चीन्हि लेल।
सर्वहारा तोरा ढ़ौआ केर
महिमाक ज्ञान नहि
तंत्र बंदूक कान्ह पड़ल
छूटय से भान नहि
लोकतंत्री फसील मे
तों भूस्से छें बूझि ले।

भूस्सा! हां भूस्सा!
मशीन वा डांग सँ
कूटतौ ओसयतौ
चैतक सूखल पछबा मे
तोरा उड़ैयतौ
ढ़ेरि भ' खरिहान मे
कोनो आश मे रहबें त
अपन मुरूख बरदक भूख
तोरे सँ मेटयतौ
घूर मे जरयतौ
सर्वहारा छें तोरा पर
प्रदूषण-कलंक लगैतौ।
****

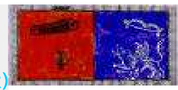
ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह नूतन अंक बालानां कृते

राजेश मोहन झा "गुंजन"

गाछक गोहारि
(विश्व पर्यावरण दिवस पर)

प्राण वायु संग ममता आंचर
छांह रूप मे दैत छी

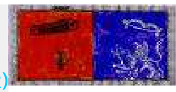


कहू बदला मनुक्ख अहां सँ
हम किछु मांगैत छी?
हाथ काटि चूल्हि जरयलहुं
पात काटि क' चार छरैलहुं
एतबहु पर संतोष नहि जे
चढि क' शीष काटैत छी।
देखू धरती केर रूप बदलि गेल
सनीर सरोवर सूखि गेल
जीवन जल बून्नी हाट बिकाय
"शुद्ध जल" कीनि पीबैत छी।
बाबा सिनेहक रोपल छलहुं
सूखि गेल काया वृद्ध भेलहुं
अहाँक नेना केर मुस्कि देखि
मरि मरि हम जीबैत छी।
आबहु सुधरि जाऊ हे मानव
गाछ रोपल जाऊ हे मानव
विलोपित वोन बरखा नहि होयत
एते त' अहूं बूझैत छी,
हे सुनू एतबहि हम चाहैत छी,।।
****
राजेश मोहन झा "गुंजन"

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

आगाँक अंक

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।



अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ २०१८ मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

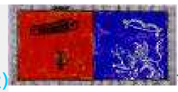
Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018



Videha_15_01_2018

Videha_01_01_2018

Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

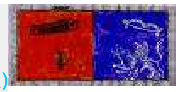
Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)



विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

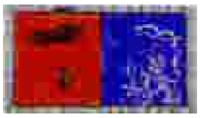
Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/

विदेह सम्मान: *सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA


सिद्धिरस्तु